RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2024-26
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

शिव अमंत्रण

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

रक्षाबंधन विशेष 2025

वर्ष:12, अंक:8, हिन्दी (मासिक), अगस्त 2025, पृष्ठ 16, मूल्य: 12:50रु.

इस **रक्षाबंधन** पर करें एक नया संकल्प

महानता का आधार है पवित्रता

पवित्रता का बंधन बांधने परमधाम से आए परमात्मा

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

रक्षाबंधन। भाई-बहन के परम पवित्र, अटूट स्नेह-प्यार का महापर्व। रेशम की डोर से बंधा यह प्यारा बंधन भाई-बहन के निश्छल प्रेम का प्रतीक है। दुनिया में भाई-बहन का रिश्ता सबसे पवित्र और अनोखा होता है। पवित्रता ही सुख-शांति की जननी है। यह पावन पर्व हमें संदेश देता है कि इंसान को सबसे ज्यादा अपने आपको व्यसन-विकारों, बुराइयों, नकारात्मक विचारों, भावनाओं से खुद की रक्षा करने की जरूरत है। आंतरिक मनोविकारों से जिसने अपनी रक्षा करना सीख लिया उसने जीवन का फलसफा सीख लिया। इंसान बाहरी ताकतों से तो लड़ लेता है लेकिन उसकी आंतरिक कमजोरी उसे शक्तिहीन बना देती है। इस दुनिया को दुख से निकालने और मनुष्यात्माओं का कल्याण करने के लिए पवित्रता के सागर, परमपिता परमात्मा इस धरा पर आकर दिव्य ज्ञान दे रहे हैं और सुख-शांति का रास्ता बता रहे हैं। रक्षाबंधन के आध्यात्मिक रहस्यों को उजागर करती, शिव आमंत्रण की स्पेशल स्टोरी...

हर बहन अपने भाई से लें एक संकल्प...

आइए, इस रक्षाबंधन को हम सभी नए और अनोखे तरीके से मनाएंगे। हर बहन अपने भाई को रक्षासूत्र बांधते समय संकल्प कराएं कि मेरे भैया! जैसे आप मुझे अपनी बहन की रीति से सदा पवित्र भाव, और विचार रखते हैं, मेरी लाज, सम्मान और इज्जत की रक्षा करते हैं, वैसे ही समाज की हर बेटी को अपनी बहन की तरह पवित्र दृष्टि से देखेंगे, उसके सम्मान और इज्जत की रक्षा करेंगे। जहां कहीं भी कोई बहन-बेटी समस्या में होगी तो हर संभव मदद करेंगे। यदि हर एक बहन अपने भाई से यह संकल्प कराए तो समाज में हर बहन-बेटी निडर होकर घर की चार दीवारी से बाहर निकल सकेगी। हम सभी के सामूहिक प्रयासों से परिवार, समाज, राष्ट्र और सारा विश्व एक आदर्श, सुंदर समाज बन जाएगा।

तिलक

भारतीय संस्कृति में शुभ कार्य के शुरु करने के पूर्व तिलक किया जाता है। तिलक शुभ, विजय और आत्म स्मृति का प्रतीक है। तिलक भृकुटी के बीच किया जाता है। शरीर को चलाने वाली चैतन्य शक्ति आत्मा, भृकुटी के मध्य विराजमान रहती है। वास्तव में तिलक आत्मा की ज्योति स्वरुप का प्रतीक है।

रक्षा सूत्र

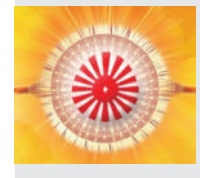

किसी भी धार्मिक कार्य में ब्राह्मण, यजमान को मंत्रोच्चार के साथ रक्षासूत्र बांधते हैं। चूंकि ब्राह्मण (ब्रह्मचर्य व्रत के साथ सभी नियमों का पालन करता हो) पवित्र होते हैं इसलिए रक्षासूत्र बांधने के लिए वह योग्य हैं। इसी तरह भाई-बहन का रिश्ता भी दुनिया में सबसे पवित्र होता है, इसलिए बहनें, भाइयों की कलाई पर रक्षासूत्र बांधती हैं।

उपहार या भेंट

रक्षासूत्र बांधने पर भाई अपनी बहन को उपहार या भेंट में देते हैं, तो क्यों न इस बार रक्षाबंधन पर हर भाई अपनी बहन से संकल्प करे कि मेरी बहना आज से मैं तुम्हारी तरह हर एक बहन की लाज की रक्षा करुंगा। हर एक बहन-बेटी का मान रखूंगा। एक बहन के लिए भाई का दिया ये संकल्प और उपहार सबसे बड़ा उपहार है।

सबके प्रयासों से आएगा रामराज्य

हर किसी के मन में एक सपना रहता है कि हमारा घर-परिवार, समाज और राष्ट्र खुशहाल, संपन्न और समृद्ध हो। लेकिन रामराज्य का सपना किसी एक के प्रयास से साकार नहीं होगा, इसके लिए हम सभी को मिलकर सामूहिक प्रयास करना होंगे। हर एक भाई-बहन को सबसे पहले अपने मन, संकल्प, संस्कार और कर्मों में रामराज्य लाना होगा। जब हर एक की सोच और संस्कार राम जैसे हो जाएंगे तो यही दुनिया रामराज्य बन जाएगी। इस रक्षाबंधन हम संकल्प लेते हैं कि सबसे पहले अपने संकल्प और कर्मों में रामराज्य के समान दैवी संस्कारों का आह्वान करेंगे, उन्हें आत्मसात कर दूसरों के लिए प्रेरक और उदाहरणमूर्त बनेंगे। आपका हिम्मत का एक कदम अनेकों के जीवन के लिए प्रेरणामूर्त बन जाएगा। क्योंकि स्व परिवर्तन ही विश्व परिवर्तन का आधार है।

नकारात्मक विचारों और भावनाओं से खुद को बचाना सबसे जरूरी

जीवन का आधार हमारे विचार और भावनाएं होती हैं। विचार जितने शक्तिशाली, उच्च, श्रेष्ठ और महान होते हैं जीवन की क्वालिटी भी उतनी ही ऊंच होती है। सफल, असफल, महान और दिव्य आत्माओं में सिर्फ विचारों का ही अंतर होता है। चारों ओर नकारात्मकता, हीन भावना से भरे माहौल के बीच खुद को इन पर हावी नहीं होने देना, बुरे विचारों से स्वयं की रक्षा कर लेना अपने आप में बड़ी उपलब्धि और महानता है। क्योंकि जब हमारे विचार कमजोर, नकारात्मक और हीन भावना से भर जाते हैं तो मन भी कमजोर हो जाता है। ऐसी स्थिति में हमें जीवन में आने वाली छोटी-छोटी समस्याएं, परिस्थितियां भी पहाड़ समान लगने लगती हैं। यदि मन शक्तिशाली है तो पहाड़ जैसी समस्या रुई के समान लगती है। समस्याएं, परिस्थितियां और कुछ नहीं कमजोर मन की रचना हैं। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर हम सभी संकल्प करें कि अपने विचारों को सकारात्मकता से भरपूर रखेंगे, सदा श्रेष्ठ, शुभ और प्रेरणादायी विचार ही करेंगे। सदा स्वयं उमंग-उत्साह से भरपूर रहेंगे और दूसरों को भी उमंग-उत्साह दिलाएंगे। खुश रहेंगे और खुशियां बांटेंगे। सदा दुआ लेंगे और दुआ देंगे। इन बातों के समावेश से आपका जीवन खुशियों से गुलजार और सुख-शांति, आनंदमय बन जाएगा।

एक राखी वीर जवानों के नाम

शरहद पर हमारे देश के वीर जवान, सैनिक भाई हमारी रक्षा के लिए ठंड, गर्मी, बारिश के बीच दिन-रात मुस्तैद रहते हैं, ताकि हम अपने घरों में त्योहार खुशी के साथ मना सकें। घर-परिवार से दूर यह सैनिक भारत मां के लाल हम वतनवासियों के लिए जान भी कुर्बान कर देते हैं। ऐसे में इस रक्षा बंधन एक राखी वीर जवानों के नाम भी सरहद पर भेजकर हम उनकी प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर सकते हैं।

आखिर किसे रक्षा की जरूरत है...?

रक्षा बंधन तो हम सभी हर साल मनाते हैं लेकिन सही मायने में रक्षा की जरूरत किसे है? क्या बहन से कोसों दूर बैठा भाई आपात स्थिति में उसकी रक्षा कर सकता है? क्या भाई, हर पल अपनी बहन के साथ रह सकता है? सबसे बड़ा बल पवित्रता का बल होता है। पवित्रता की शक्ति से ही विश्व परिवर्तन और नवयुग का सृजन होता है। कुंवारी कन्या की हम दैवी का रूप मानकर पूजन करते हैं। शुभ कार्य में आगे करते हैं। नौ दुर्गा में कन्या पूजन का विशेष महत्व बताते हैं, लेकिन जब कन्या का विवाह हो जाता है तो वह सबके सामने शीश नवाने लगती है। विवाह के पूर्व तक कन्या को उसकी पवित्रता के कारण दैवी स्वरूप का दर्जा दिया जाता है। संत-महात्मा, ऋषि-मुनियों के सामने भी हम सभी उनकी पवित्रता के कारण ही आशीर्वाद लेते हैं। पवित्रता से जीवन महान और आचरण योग्य बन जाता है। परमात्मा का यही संदेश है कि यह नई सृष्टि के सृजन का संधिकाल चल रहा है मेरे बच्चों पवित्र बनो, योगी बनो।

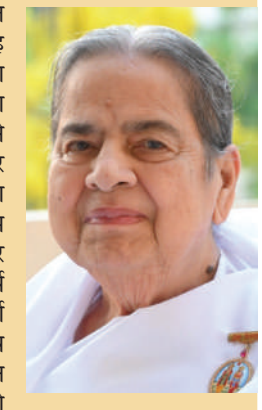

- राजयोगिनी मोहिनी दीदी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज

पवित्रता का परम पर्व

परमात्मा पांच तरह से करते हैं हमारी रक्षा, मनुष्यों को छुड़ाते हैं माया के बंधनों से...

शास्त्रों में उल्लेख है कि जब-जब इस सृष्टि पर घोर अंधकार-अज्ञान, पाप कर्म बढ़ जाते हैं, तब-तब नई दैवी सतयुगी सृष्टि की स्थापना और सृजन करने के लिए परमपिता परमात्मा युगे-युगे अवतरित होते हैं। वह पवित्रता के बल से मनुष्य को पतित से पावन बनाकर नई दुनिया के योग्य बनने की शिक्षा देते हैं। रक्षाबंधन इसी पवित्रता और नई शुरुआत का प्रतीक है। ये बंधन से अपनी पवित्रता की रक्षा करने का और नई दुनिया को सृजन का महापर्व है।

नई सृष्टि के सृजन का आधार है पवित्रता

1. इंद्रियों पर विजय प्राप्त करने का सूचक है यह पावन पर्व : यह त्योहार एक धार्मिक त्योहार है और इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के संकल्प का सूचक है अर्थात् भाई और बहन के नाते में जो मन, वचन और कर्म की पवित्रता समाई हुई है, उसका बोधक है। परमपिता शिव परमात्मा ने इस सृष्टि पर अवतरित होकर प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार लेकर कन्याओं-माताओं को मन-वचन-कर्म की संपूर्ण पवित्रता का संकल्प कराया। संपूर्ण पवित्रता का व्रत धारण करने के कारण और परमात्मा की शिक्षाओं को जीवन में शिरोधार्य करने वाले ब्रह्मा वत्स ब्राह्मण कहलाए। उन्हें ब्राह्मण पद पर आसीन किया। साथ ही ज्ञान का कलश दिया और उन द्वारा भाई-बहन के सम्बन्ध की पवित्रता की स्थापना का कार्य किया। जिसके फलस्वरूप सतयुगी पवित्र सृष्टि की स्थापना हुई। उसी पुनीत कार्य की आज पुनरावृत्ति हो रही है। ब्रह्माकुमारी बहनें ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग द्वारा ब्राह्मण पद पर आसीन होकर राखी बांधकर बहन-भाई के शुद्ध स्नेह और पवित्रता के शुद्ध संकल्प की रक्षा करती हैं।

2. ईश्वरीय बंधन में बंधने के बाद कुछ शेष नहीं रह जाता : मानव स्वभाव से ही स्वतंत्रता प्रेमी है। अतः मनुष्य जिस बात को बंधन समझता है, वह उससे छूटने का प्रयत्न करता है। परन्तु रक्षा बंधन को बहनें और भाई त्योहार अथवा उत्सव समझकर खुशी से मनाते हैं। यह एक न्यारा और प्यारा बंधन है। बंधन दो प्रकार के होते हैं एक है ईश्वरीय बंधन और दूसरे हैं सांसारिक अर्थात् कर्मों के बंधन। ईश्वरीय बंधन से मनुष्य को सुख मिलता है, परन्तु दूसरे प्रकार के बंधन से दुःख की प्राप्ति होती है। रक्षाबंधन ईश्वरीय बंधन, आध्यात्मिक बंधन अथवा धार्मिक है। विचारवान् मनुष्य ईश्वरीय बंधन में तो बंधना चाहते हैं परन्तु माया के बंधन से मुक्त होना चाहते हैं। जैसे आज आध्यात्मिकता और धर्म-कर्म क्षीण हो जाने से संसार की वस्तुओं से अब सत् अथवा सार निकल गया है, वैसे ही आध्यात्मिकता को निकाल देने से इस त्योहार से भी सत् अथवा सार निकल गया है। वरना यह त्योहार बहुत ही महत्त्वपूर्ण और उच्च कोटि का त्योहार है।

3. सांसारिक आपदाओं अथवा संकटों से रक्षा : सदा के लिए दुःखों और संकटों से भी एक परमात्मा ही रक्षा कर सकते हैं। कोई भी मनुष्यात्मा यह कार्य नहीं कर सकती है। परमात्मा को ही संकटमोचन, दुःख भंजन और सुख दाता कहते हैं। परमात्मा ही काल और कंटक दूर करने वाले हैं। प्रकृति तो उनकी दासी है। मनुष्यों को माया के बंधन से भी परमात्मा ही छुड़ाते हैं, तभी तो मनुष्य परमपिता पुकार कर कहते हैं- विषय-विकार मिटाओ पाप हरो देवा। गज और ग्राह का जो प्रसंग प्रसिद्ध है, वह भी इसी रहस्य को स्पष्ट करता है कि जब ग्राह गज को निगलने ही वाला था तो भगवान् ने ऐसे समय उसकी रक्षा की। फूल तोड़कर अपनी सूंड ऊपर की तो भगवान ने यह देखकर कि वह पुष्प चढ़ा रहा है अर्थात् याद कर रहा है, उसकी रक्षा का संकल्प किया। वास्तव में आध्यात्मिक अर्थ में ज्ञानी मनुष्य ही गज हैं, माया ही एक ग्राह है, यह संसार एक सागर है और कमलरूपी पुष्प अलिप्त जीवन का सूचक है। अतः इसका भाव यह है कि माया के आघातों से भगवान ही ज्ञानवान मनुष्यों की रक्षा करते हैं। ज्ञान ही स्वदर्शन चक्र है, जिससे माया का गला कट जाता है और परमात्मा ही सभी के रक्षक हैं। इसी कारण गीता में यह वाक्य हैं कि साधुओं का भी परित्राण करने वाले परमात्मा ही हैं।

4. धर्म, पवित्रता, सतीत्व की रक्षा : दुष्टों से पवित्रता की रक्षा वास्तव में सर्व समर्थ परमपिता परमात्मा ही कर सकते हैं। इसलिए महाभारत का यह प्रसंग प्रसिद्ध है कि कौरवों की भरी सभा में जब द्रौपदी का चीर हरण होने लगा तो द्रौपदी ने भगवान को ही पुकारा था, क्योंकि तब कोई भी मित्र या सम्बन्धी उसकी रक्षा न कर सका था। इसलिए ऐसी आपदा के समय लोग भगवान् को ही सम्बोधित करके कहते हैं- हे प्रभु, हमारी लाज रखो, हमारे धर्म की रक्षा करो। निस्संदेह भगवान् ही हैं जो माताओं-बहनों के चीर बढ़ाते हैं अर्थात् उनके सतीत्व और धर्म की रक्षा करते हैं। इसी कारण दुःख के समय मनुष्य के मुख से ये शब्द निकलते हैं हे प्रभु, मुझे सहारा दो।

5. काल के पंजे से रक्षा : काल के पंजे से छुड़ाने वाले भी एक परमात्मा ही हैं जिन्हें कालों का काल महाकाल, महाकालेश्वर, अमरनाथ, प्राणनाथ कहा जाता है। काल से बचने के लिए मनुष्य मृत्युंजय का पाठ करते हैं अर्थात् परमात्मा शिव की शरण में जाने की कामना करते हैं। परमात्मा की रक्षा मिलने से ही मनुष्य यमदूतों से बच सकते हैं और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। परमात्मा की महिमा में कहा जाता है-जाखो राखे साइयां, मार सके न कोय। बाल न बांका कर सके, चाहे सब जग बैरी होय।

बहनें रक्षाबंधन क्यों बांधती हैं?

अब प्रश्न उठता है कि यदि परमात्मा ही पांचों प्रकार की रक्षा करते हैं तो बहनें, भाइयों को रक्षाबंधन क्यों बांधती हैं अथवा ब्राह्मण भी रक्षाबंधन क्यों बांधते हैं? इस बात को समझने के लिए, आपको यह जानना चाहिए कि इस पर्व को 'विष तोड़क पर्व' अथवा 'पुण्य प्रदायक पर्व' भी कहा जाता है। इन नामों से सिद्ध है कि यह बंधन विषय-विकारों को छोड़ने और पुण्यात्मा बनने के लिए है। अतः 'रक्षाबंधन' पवित्रता अथवा धर्म की रक्षा करने का बंधन है। बहन और भाई का संबंध बहुत पवित्र होता है। अतः बहनों का भाइयों को बंधन बांधने का अर्थ भी यही होता है कि भाई यह व्रत लें कि वे पवित्रता को धारण करेंगे तथा अपनी दृष्टि, वृत्ति और कृति को पवित्र बनाएंगे। मन, वचन और कर्म से पवित्र रहकर सभी नारियों से अपनी बहन के समान बर्ताव करेंगे। ब्राह्मणों द्वारा रक्षाबंधन बंधवाने का अर्थ भी यही है। प्राचीन काल में सच्चे ब्राह्मण पवित्र रहकर दूसरों को पवित्र रहने की प्रेरणा (शिक्षा) देते थे। अतः इस दिन वह बंधन बांधते हैं, ताकि प्रत्येक मनुष्य पवित्रता का व्रत ले। परन्तु आज न तो बहनें ही इस मनसा से रक्षाबंधन बांधती हैं और न ब्राह्मण ही। आज मनुष्य इस आध्यात्मिक रहस्य को भूल गया है और वह इस महान पर्व को एक रीति-रिवाज की तरह ही मानता है। इसलिए आज यह पर्व 'विष तोड़क' अथवा 'पुण्य प्रदायक' पर्व के रूप में नहीं रहा और व्यक्ति अथवा समाज को इससे वह प्राप्ति नहीं होती जो इसे यथार्थ रूप में मनाने से हो सकती है।

रक्षाबंधन का बंधन निभाने से मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति

रक्षाबंधन बहुत ही रहस्ययुक्त पर्व है। यदि ज्ञान-युक्त रीति से इस बंधन को निभाया जाए तो मनुष्य को मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति हो सकती है। इसका भाव यही है कि सृष्टि की आदि (अर्थात् स्थापना काल) में परमपिता परमात्मा शिव और प्रजापिता ब्रह्मा के निर्देश से सच्चे ब्राह्मणों ने तथा शिव-शक्ति रूपा बहनों ने मनुष्यों को यह बंधन बांधा था कि वे पवित्र बनें अर्थात् काम, क्रोधादि पर विजय प्राप्त करें।

कैसी होगी आने वाली स्वर्णिम दुनिया

आने वाली नई सतयुगी स्वर्णिम दुनिया धन-धान्य से भरपूर, हीरे-जवाहरात के महल होंगे। वहां 12 महीने मौसम सदाबहार रहता है। प्रकृति के पांचों तत्व संतुलित और सुखदायी होते हैं। हमारे संकल्पों के आधार पर प्रकृति चलती है। उस दुनिया में प्रत्येक देवी-देवता सदा सर्व गुणों, सर्व शक्तियों और सर्व कलाओं से भरपूर और संपन्न होते हैं। परम वैभव से संपन्न वह दुनिया इतनी सुंदर, सुखमय, आनंदमय होगी जिसकी मात्र कल्पना ही की जा सकती है। वहां संकल्प शक्ति के आधार पर दुनिया चलती है। जहां दूध-घी की नदियां बहती हैं, गाय और शेर एक घाट पानी पीते हैं।

परमात्मा के महावाक्य-

मैं सृष्टि पर सतयुगी शिवालय बनाने के लिए अवतरित हुआ हूं

परमात्मा पांच तरह से करते हैं हमारी रक्षा, मनुष्यों को छुड़ाते हैं माया के बंधनों से...

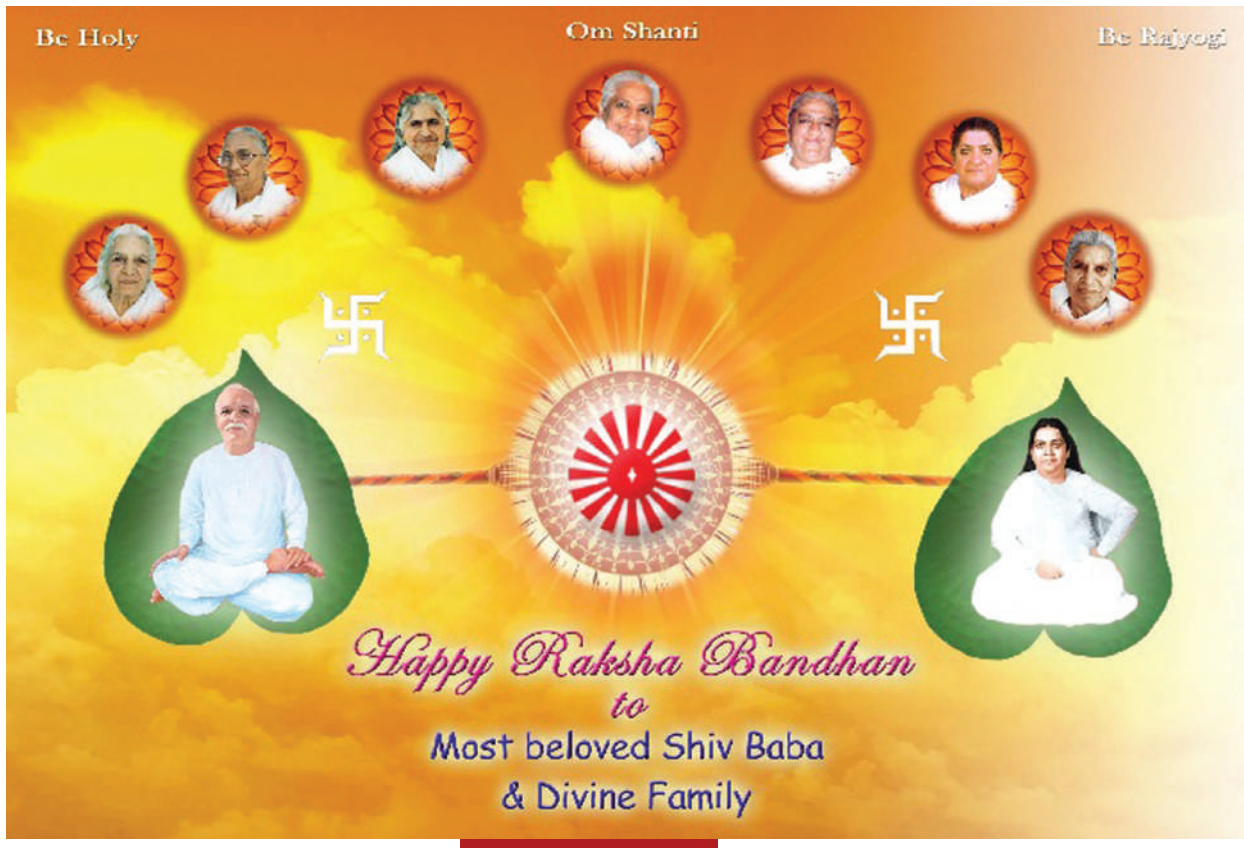

शिव आमंत्रण, आबूरोड।

संकट की वेला में द्रौपदी की पुकार सुनकर भगवान उसका चीर बढ़ाते हैं। शास्त्रों में तो एक द्रौपदी और एक दुर्योधन का वर्णन किया गया है। लेकिन वर्तमान स्थिति में देखा जाए तो यह चरित्र-चित्रण सारे समाज की दुर्दशा का है। जब व्यभिचार की अति हो जाती है और पाप का घड़ा भर जाता है तो कलियुग के अन्त और सतयुग की आदि के संगमयुग की वेला में गीता के भगवान शिव स्वयं अवतरित होकर यह महावाक्य उच्चारते हैं कि 'हे आत्माओं! काम महाशत्रु है। यही सबसे बड़ी हिंसा है जो आदि-मध्य-अन्त दु:ख देने वाली है। इसी के द्वारा यह सृष्टि पतित बन गई है, जहां घर-घर में काम कटारी चलती है। काम- विकार नर्क का द्वार है। तुमने ही मुझ पतित पावन परमात्मा को पुकारा है, अब मैं इस कलियुग को सतयुगी शिवालय बनाने के लिए अवतरित हुआ हूं। अब इस कलियुगी पुरानी दुनिया का विनाश और सतयुगी नई दुनिया की पुनर्स्थापना होनी है। उस सतयुगी देवलोक में सम्पूर्ण निर्विकार आत्माएं ही जन्म ले सकेंगी।

पवित्रता ही सुख और शान्ति की जननी है। यदि तुम पवित्र बनोगे तो नूतन विश्व के मालिक बनोगे, वरना विनाश को प्राप्त हो जाओगे। अत: अब मैं तुम्हें आदेश देता हूं कि सारे कल्प के अपने इस अन्तिम जन्म में ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करो और पवित्र बनो। जो मनुष्य परमपिता परमात्मा शिव की इस कल्याणकारी आज्ञा को मानकर पवित्रता के बंधन में बंधने को सहर्ष तैयार हो जाते हैं उन्हीं की मन-वचन-कर्म से, काम विकार से रक्षा के लिए परमात्मा शिव उन्हें रक्षाबंधन के पवित्र सूत्र में बंधवाते हैं जो उनके आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत के पालन करने की प्रतिज्ञा का प्रतीक है। इस प्रकार इस पावन पर्व का प्रारम्भ स्वयं परमात्मा द्वारा पुरुषोत्तम संगमयुग पर होता है। वर्तमान में यह वही समय चल रहा है।

पवित्रता की राखी

सन्यासियों ने तो नारी को नर्क का द्वार कहकर अपवित्रता का सारा दोष नारी पर ही लगा दिया है। परन्तु वास्तव में नर और नारी दोनों ही पतित और विकारी बनते हैं। प्राय: नारियों की भेंट में नर ही अधिक कामी होते हैं। द्रौपदी की तरह कोई पुरुष अपनी लाज की रक्षा के लिए परमात्मा को नहीं पुकारते हैं। काम विकार के लिए प्रस्ताव भी प्राय: पुरुष ही करते हैं। कलियुग के अन्त के समय का पतित समाज भी पुरुष प्रधान होता है। अत: जैसा पहले स्पष्ट किया जा चुका है कि भाइयों के पवित्र बनने से ही बहनों की लाज बच सकती है। अत: परमपिता शिव परमात्मा पुरुषों को ही रक्षाबंधन बंधवा कर उनसे ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा करवाते हैं। इसीलिए भाइयों को बहनों द्वारा राखी बांधने की प्रथा चली आती है।

जो मनुष्यात्माएं पवित्रता का बंधन बांधेंगे वे पुन: देवपद प्राप्त करेंगी

पुराणों में रक्षाबंधन को लेकर यही उल्लेख है कि जब असुरों से हार कर इन्द्र ने अपना राज्य-भाग्य गंवा दिया था तो उन्होंने इन्द्राणि से यह रक्षाबंधन बंधवाया था और इसके फलस्वरूप अपना खोया हुआ स्वराज्य पुन: प्राप्त कर लिया था। इसी प्रकार दूसरे आख्यान में यह वर्णन मिलता है कि यम ने भी अपनी बहन यमुना से रक्षाबंधन बंधवाया था और उन्होंने कहा था इस बंधन को बांधने वाले मनुष्य यमदूतों से छूट जाएंगे। यहां प्रश्न उठता है कि इस त्योहार से इतनी बड़ी प्राप्ति, कैसे होती है? यह त्योहार विष तोड़क पर्व, पुण्य प्रदायक पर्व आदि नामों से भी प्रसिद्ध है। यह त्योहार पवित्रता की रक्षा करने, पुण्य करने और विषय-विकारों की आदत को तोड़ने की प्रेरणा देता है।

अत: यदि हम ऐसा बंधन बांधे तो निश्चय ही उपर्युक्त प्राप्ति हो सकती है। वास्तव में उपर्युक्त सभी बातों का आध्यात्मिक अर्थ है। यह अर्थ सारे कल्प की कहानी जानने से समझ में आता है। सतयुग और त्रेता में तो सभी मनुष्यात्माएं पूर्ण पवित्र (निर्विकारी) थीं, इसलिए उन्हें स्वर्ग का सुख और स्वराज्य प्राप्त था और श्रेष्ठाचार के कारण वे देवी-देवता कहलाती थीं। द्वापरयुग से लेकर वही देवी-देवता वाम मार्ग में चले गए अर्थात् विकारों के वश हो गए और इन काम-क्रोधादि विकारों से हारकर उन्होंने अपना राज्य-भाग्य गंवा दिया था। अब संगम समय फिर से परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के मुख द्वारा सहज ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देकर पतितों को पावन अथवा शूद्र से सच्चे ब्राह्मण बना रहे हैं। अत: जो मनुष्यात्माएं पवित्रता का बंधन बांधेंगे वे पुनः देवपद प्राप्त करेंगी अर्थात् अपना खोया हुआ स्वराज्य राज्य-भाग्य प्राप्त करेंगी और यम के दंड से भी छूट जाएंगी और मुक्ति भी प्राप्त करेंगी।

हम सभी परमात्मा की संतान हैं

गोपीवल्लभ परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा सच्चा 'रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ' रचकर ईश्वरीय ज्ञान व योग और पवित्रता के बल से सर्वप्रथम अबला नारियों को सबला अथवा शिव-शक्तियां बनाते हैं। भारत में दुर्गा, अम्बा, काली, शीतला इत्यादि शिव शक्तियों का गायन-पूजन आज तक होता है। वास्तव में इन्हीं शिव शक्तियों अथवा चेतन ज्ञान-गंगाओं द्वारा मनुष्यों को रक्षाबंधन बांध कर ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा करवाने का पावन कर्त्तव्य चलता है। ब्राह्मणों द्वारा अपने यजमानों को राखी बांधने की प्रथा भी प्रचलित है। पुराने समय में ब्राह्मण ब्रह्मचर्य सहित सभी नियमों का पालन करते थे इसलिए वह इसके योग्य थे। लेकिन वर्तमान में कुख वंशावली ब्राह्मण न तो रक्षाबंधन के महत्त्व को जानते हैं और न ही इनमें वह ईश्वरीय ज्ञान-योग बल है जिससे वह स्वयं और दूसरों को पवित्रता की धारणा करवा सकें। ब्रह्मा मुख वंशावली शिव-शक्तियां ही वह सच्ची बालब्रह्मचारिणी ब्राह्मणियां (ब्रह्माकुमारियां) हैं जो स्वयं पवित्रता के व्रत को धारण करके अन्य मनुष्यों को भी इस कल्याणकारी बंधन में बांधने की अलौकिक सेवा करती हैं। पावन बनने के लिए वे पुरुषों को यह अनोखी युक्ति बताती हैं कि सभी मनुष्य-आत्माएं एक ही पिता परमात्मा की सन्तान होने के नाते से भाई-बहन ही हैं। इसी सम्बन्ध में स्थित होकर चलेंगे तो काम विकार का प्रश्न ही नहीं उठेगा। लौकक बहन द्वारा भाई को राखी बांधने की रस्म, इसी महत्त्वपूर्ण रहस्य का रूप है।

यह त्योहार कब और कैसे शुरू हुआ?

ऊपर जो कल्प की कहानी बताई गई है, उससे इस प्रश्न का समाधान मिल जाता है। प्रजापिता ब्रह्मा के कमल मुख द्वारा जिन नर-नारियों ने वास्तविक ज्ञान और योग की शिक्षा प्राप्त करके विकारों रूपी विष को तोड़ा था और स्वयं को पुण्यात्मा बनाया था, उन सच्चे ब्राह्मणों अथवा सच्चे ब्रह्माकुमारों और ब्रह्माकुमारियों ने जन-जन को पवित्रता का प्रतीक यह रक्षाबंधन बांधा। जिन्होंने ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग सीखकर उस बंधन को निभाया, उन्होंने मुक्ति और जीवनमुक्ति प्राप्त की। अत: इस बंधन को आज तक भी मनाया जाता है और आज ब्राह्मण और बहनें यह बंधन बांधते हैं।

इस राखी एक संकल्प पौधा लगाने का...

आइए, इस रक्षाबंधन पर हम एक पौधा लगाने का संकल्प लेते हैं। रक्षाबंधन पर पर्यावरण और पेड़-पौधों की रक्षा का संकल्प लेते हैं। धरती मां के लिए इससे बड़ी सौगात और कुछ नहीं हो सकती है। यदि पर्यावरण बचेगा, प्रकृति बचेगी तो हमारा भविष्य सुखद और आनंदमय रहेगा। अब वक्त आ गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण की रक्षा के लिए आगे आना होगा।

स्व परिवर्तन से होगा विश्व परिवर्तन

ब्रह्माकुमारी संस्थान पिछले 87 वर्षों से समाज के सभी वर्गों के उत्थान, सशक्तिकरण और विकास के लिए समर्पित रूप से कार्य कर रही है। संस्थान का मूल नारा है- स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन और समाज में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना। आध्यात्म ही वह शक्ति है जिसके बल से हम विश्व में शांति, सद्भाव और एकता लाकर वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को साकार कर सकते हैं। संस्थान योग-साधना के साथ विश्व के 140 देशों में सामाजिक सरोकार के कार्यों में अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभा रहा है। समाज के अंतिम छोर के व्यक्ति तक लाभ पहुंचाने के लिए देशभर में नशामुक्त भारत अभियान, मेरा भारत स्वस्थ भारत, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ और महिला सशक्तिकरण, आत्मनिर्भर किसान अभियान, यौगिक खेती अभियान, यौगिक गृह वाटिका अभियान, पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, जेल सुधार, स्वच्छ भारत मिशन आदि अभियान चलाए जा रहे हैं। नारी तू कल्याणी के पवित्र संकल्प के साथ समाज में बेटियों का मान बढ़ाने के लिए समय प्रति समय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस, सभा, सम्मेलन और सेमीनार आयोजित किए जाते हैं। रक्तदान, पर्यावरण संरक्षण, जैविक-यौगिक खेती, नशा मुक्ति आदि जन सरोकार से जुड़े मुद्दें पर देशभर में कॉन्फ्रेंस आयोजित कर लोगों को जागरूक किया जा रहा है।

100 बेटियां बनीं शिवप्रिया

संयम के पथ पर चलते हुए परमात्मा **शिव** को बनाया अपना **जीवनसाथी**

शिव आमंत्रण, आबूरोड, राजस्थान।
सौ बेटियां अध्यात्म की राह पर चलते हुए शिवप्रिया बन गईं। शिवलिंग को वरमाला पहनाकर परमात्मा शिव बाबा को अपना जीवनसाथी बनाया और आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का संकल्प लिया। मौका था ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन में आयोजित अलौकिक दिव्य समर्पण समारोह का। इसमें देशभर से उच्च शिक्षित बीए, एमए, एमकॉम, डॉक्टरेट बेटियों ने अपने माता-पिता और परिजन के सामने संयम पथ पर चलने और ईश्वरीय सेवा का संकल्प लिया। इस महासमर्पण के पांच हजार से अधिक लोग साक्षी बने।

बेटियों के समर्पण पर बोलीं दीदियां-

- अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी ने कहा कि धन्य हैं वह माता-पिता जिन्होंने अपनी लाड़लियों को ईश्वरीय सेवा में अर्पित किया है। यह अपने आप में महान कार्य है। आप सभी जिस सेवाकेंद्र पर रहें, वहां खुश रहें, प्रसन्न रहें और परमात्मा का नाम रोशन करें।
- संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके संतोष दीदी ने कहा कि आप सभी माता-पिता बहुत भाग्यशाली हैं जो भगवान को ही जमाई बना लिया। अपनी कन्या के लिए सबसे अच्छा घर और वर ढूंढा है। आप कितना भाग्यशाली हैं कि आपकी बेटी कभी विधवा नहीं होगी, वह सदा सुहागिन रहेगी। इन बेटियों का भी परम सौभाग्य है कि इन्होंने अपना जीवन ही परमात्मा की सेवा में लगा दिया।
- संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके सुदेश दीदी ने कहा कि युवावस्था में संयम का मार्ग अपनाना अपने आप में प्रेरक और महान कार्य है।
- अतिरिक्त महासचिव बीके करुणा भाई ने कहा कि आज जिन कुमारियों का समर्पण हो रहा है उन्हें जन्म देकर संस्कारित करने वाले माता-पिता धन्य हैं। परम सौभाग्यशाली हैं जो अपनी बेटी को परमात्मा की सेवा में समर्पित कर रहे हैं। आज का दिन इन बेटियों के लिए सदा याद रहेगा।

समर्पण में सभी बहनों को कराए यह मुख्य तीन संकल्प

- समर्पण समारोह में बहनें दुल्हन की तरह सज-धजकर स्टेज पर बैठीं, जहां वरिष्ठ दीदियों ने सभी को एक-एक संकल्प पत्र दिए और यह तीन संकल्प कराए-
- पहला मैं आज से मन-वचन-कर्म से परमात्मा को अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर रही हूं। आज मैं परमात्मा शिव को साजन, पति के रूप में स्वीकार करती हूं। मैं यह निर्णय अपनी स्वेच्छा से ले रही हूं।
- दूसरा- मैं सदा इस ईश्वरीय यज्ञ के बनाए नियम-मर्यादा में रहकर चलूंगी, सेवा करुंगी और सदा अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए योग-साधना को अपने जीवन का लक्ष्य बनाऊंगी।
- तीसरा- इस ईश्वरीय यज्ञ, परिवार की वरिष्ठ दीदियां ईश्वरीय सेवा के लिए जहां रहने, सेवा करने के लिए कहेंगे वहां खुशी-खुशी सेवा के लिए जाने को तैयार रहूंगी। विपरीत परिस्थिति में भी खुश रहते हुए सेवा के लिए हर बात में हां, जी का पाठ पक्का करुंगी। भगवान के घर में जो खाने-पीने मिलेगा उसका सदा खुश-राजी रहूंगी।

अब तक 50 हजार ब्रह्माकुमारी बहनें विश्वभर में समर्पित

वर्ष 1937 में ब्रह्माकुमारीज़ की नींव रखी गई। तब से लेकर अब तक 87 वर्ष में संस्थान में 50 हजार ब्रह्माकुमारी बहनों ने अपनी जीवन मानव सेवा के लिए समर्पित किया है। ये बहनें तन-मन-धन के साथ समाजसेवा, विश्व कल्याण और सामाजिक, आध्यात्मिक सशक्तीकरण के कार्य में जुटी हैं।

दो साल पूर्व हुआ था विशाल समर्पण समारोह

इसके पूर्व मुख्यालय शांतिवन में ही 29 जून 2023 को ब्रह्माकुमारीज़ के इतिहास का सबसे बड़ा समर्पण समारोह आयोजित किया गया था, जिसमें 450 बेटियों ने एकसाथ अपना जीवन समर्पित किया था। इनमें कभी बहनें सीए, एमटेक और डॉक्टरेट थीं।

झलकियां

- मधुरवाणी ग्रुप के कलाकारों ने स्वागत गीत और समर्पण गीत की शानदार प्रस्तुति से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।
- अहमदाबाद से आईं सुप्रसिद्ध गायक डॉ. बीके दामिनी बहन ने अपने मधुर आवाज से समारोह में समां बांध दिया।
- राजकोट से आए कलाकारों ने नुक्कड़ नाटक से प्रकृति संरक्षण से लेकर बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाई, यातायात सुरक्षा, जल संरक्षण का संदेश दिया।
- 75 से अधिक कलाकारों ने देशभर की अलग-अलग संस्कृतियों की प्रस्तुति देकर समारोह में गरिमा बढ़ाई।
- मीडिया विंग के उपाध्यक्ष बीके आत्म प्रकाश भाई ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन बीके शारदा दीदी ने किया।

आबूरोड @ मुख्यालय शांतिवन

ब्रह्माकुमारी बनकर बहुत खुशी हो रही है

मैं बचपन से ही ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में थी। क्योंकि मेरी मां ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ी हैं। बचपन से ही अध्यात्म के प्रति लगन थी। इससे मैंने राजयोग मेडिटेशन सीखा। राजयोग से मुझे कई अच्छी अनुभूतियां हुईं। समाजसेवा और विश्व कल्याण के उद्देश्य से मैंने अपना जीवन ब्रह्माकुमारी बनने का संकल्प किया है। आज मुझे बेहद खुशी हो रही है। मेरी दो बड़ी बहनें भी ब्रह्माकुमारी हैं जिन्हें देखकर मुझे बचपन से प्रेरणा मिलती थी।

- डॉ. बीके पूजा, नैचुरोपैथी, जबलपुर, मप्र

मैं पिछले 30 साल से राजयोग का अभ्यास कर रही हूं। राजयोग के अभ्यास से मेरा जीवन पूरा बदल गया। मैंने संकल्प किया है कि जैसे मेरे जीवन में सकारात्मक बदलाव आए हैं, वैसे दूसरों का जीवन बदलने के लिए भी कुछ करुं। ताकि लोग आज के तनावपूर्ण जीवन, दुख-दर्द से बाहर निकल सकें। फिर माता-पिता की आज्ञा लेकर ब्रह्मचर्य व्रत को अपनाते हुए ब्रह्माकुमारी बनने का संकल्प किया।

- बीके ज्योति, एमए, मनावर(धार), मप्र

स्कूल में जब शिक्षक सभी से पूछते थे कि आप बड़े होकर क्या बनोगे तो मेरे मन में बचपन से ही संकल्प था कि कुछ अलग करना है। मुझे कुछ समाज के लिए करना है। इस दौरान ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आई और यहां की आध्यात्मिक पत्रिकाओं को पढ़ने से मेरे जीवन की दिशा बदल गई। जब मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि यहां विश्व कल्याण के लिए सेवाएं की जा रही हैं। सेवा का इससे बढ़कर कोई माध्यम नहीं हो सकते हैं तो मैंने अपना जीवन समर्पित करने का फैसला किया।

- बीके पार्वती, बीए, गौरझामर, सागर, मप्र

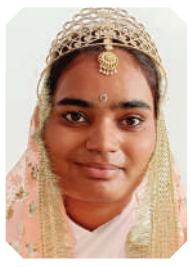

मेरे दादाजी ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े थे। इस कारण मैं भी सेंटर आने लगी। जब मैंने यहां आकर इस ज्ञान को समझा और दीदियों का आदर्श जीवन देखा तो मेरे मन में भी विश्व कल्याण की सेवा का भाव जागृत हुआ। पहले मैंने घर में रहते ही अपना जीवन आदर्श बनाया, फिर सेवाकेंद्र पर आ गई। आज अपना जीवन परमात्मा को अर्पित करते हुए बहुत ही खुशी और गर्व की अनुभूति हो रही है।

- बीके कामिनी, 12वीं पास, सागर, मप्र

बचपन से ही मैं ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान को सुनती आ रही हूं। मुझे यह ज्ञान सुनकर अच्छा लगता था। राजयोग मेडिटेशन से कई अनुभूति हुईं। बचपन से ही मेरा संकल्प था कि मुझे कुछ समाज के लिए, विश्व के लिए करना है। लोगों को सद्मार्ग पर चलने की राह दिखाई है। परमात्मा को ही अपने जीवन साथी के रुप में स्वीकारने का संकल्प किया है। आज खुद को भाग्यशाली महसूस कर रही हूं कि जीवनसाथी के रुप में स्वयं परमपिता शिव परमात्मा को अपनाया है। परमात्म ज्ञान के माध्यम से लोगों का जीवन बदलते देख आत्मा को संतुष्टी और खुशी मिलती है। भगवान को पाकर मेरा जीवन धन्य हो गया।

- बीके स्वाति, बीकॉम, रतलाम, मप्र

स्कूल में मुझे साथी साध्वी कहकर चिढ़ाते थे

मप्र के रीवा जिले से आईं 24 वर्षीय बीके रूपा ने शिव आमंत्रण से अपने जीवन का अनुभव सांझा करते हुए बताया कि मुझे बचपन से ही एकांत, अध्यात्म और अध्ययन में रुचि थी। जब मैं 11 साल की थी तब से ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर रहकर ईश्वरीय सेवा के साथ-साथ बीए फाइनल तक की पढ़ाई पूरी की। स्कूल में सभी कलर कपड़े पहनकर जाते थे और मैं सफेद कपड़े पहनकर जाती थी तो साथी सहेली मुझे साध्वी, संत और मम्मा कहकर चिढ़ाते थे। यहां तक कि मेरे शिक्षक भी हंसी-मजाक में साध्वी और संत कहते थे। मुझे बचपन से ही भगवान से अगाध प्रेम था। मैं परमात्मा की मीरा बनना चाहती थी। इसी संकल्प को पूरा करने के लिए आज ब्रह्माकुमारी बनकर अपना पूरा जीवन संयम पथ पर चलने का आज संकल्प ले रही हूं।

बीके रुपा ने बताया कि हम दो भाई और तीन बहनें हैं। सबसे बड़ी बहन भी ब्रह्माकुमारी हैं, जिनका दिव्य, आदर्श और तपस्वी जीवन देखकर मुझे अध्यात्म की राह पर चलने की सबसे ज्यादा प्रेरणा मिली। बचपन से ही मुझे फैशन पसंद नहीं था। सादा रहन-सहन पसंद था।

जब 2021 में सबने बचने की उम्मीद छोड़ दी थी : वर्ष 2021 की बात है। जांच में मुझे माइंड में आठ गांठें निकलीं। डॉक्टर ने बताया कि ब्रेन ट्यूमर है। काफी समय तक रीवा में इलाज कराया, लेकिन कोई आराम नहीं हुआ। फिर जबलपुर लेकर गए जहां डॉक्टर ने मेरी बचने की उम्मीद छोड़ दी थी। मेरे परिवार वालों ने भी आस छोड़ दी थी। मैं इतनी कमजोर हो गई थी कि अपने पैरों पर खड़ी नहीं हो पाती थी। तब रीवा सेवाकेंद्र की निदेशिका बीके निर्मला दीदी मुझे एम्स भोपाल लेकर गईं। जहां डॉक्टर्स ने सभी चेकअप कर इलाज शुरू किया, लेकिन उन्होंन भी जवाब दे दिया था। मेरी याददाश्त भी चली गई थी। लोगों को पहचानना भी बंद कर दिया था। इतने दर्द के बाद भी मैंने परमात्मा को याद करना नहीं छोड़ा। मैं बैड पर ही लेटे-लेटे भगवान शिव बाबा से बोलती रहती थी कि यदि मैं बच गई और नया जीवन मिला तो यह पूरा जीवन आपकी सेवा में अर्पण कर दूंगी। डेढ़ साल लंबा इलाज चला। लेकिन शिव बाबा का कमाल है कि आज पूरी तरह से स्वस्थ हूं। इस दौरान मेरा बीए फाइनल इयर के भी पेपर आ गए लेकिन कॉलेज प्रबंधन की मदद से सब आसान हो गया और मेरी डिग्री पूरी हो गई।

संपादकीय

सच्ची आज़ादी : आत्मा की उड़ान

15 अगस्त... यह सिर्फ एक तारीख नहीं, बल्कि भारतवर्ष की आत्मा का गौरवगान है। यह दिन हमें उन असंख्य बलिदानों की याद दिलाता है, जिन्होंने भारत को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। लेकिन आज, जब हम खुले आकाश के नीचे सांस ले रहे हैं, तब भी एक प्रश्न हमारी आत्मा से पूछता है क्या हम भीतर से स्वतंत्र हैं? ब्रह्माकुमारीज़ की ज्ञानदृष्टि से, स्वतंत्रता का असली अर्थ है आत्मा की अपनी सत्ता को पहचानना और उस पर राज्य करना। जब हम क्रोध के वश में निर्णय लेते हैं, जब लोभ हमारे विचारों को चलाता है, जब मोह हमें सत्य से दूर कर देता है तब हम वास्तव में गुलाम हैं। यह विकार ही हैं जो आत्मा की ऊँचाई को बाँध लेते हैं और भीतर ही भीतर खोखला कर देते हैं। आज स्वतंत्र भारत को दूसरी आज़ादी की ज़रूरत है वह है- आत्मिक परतंत्रता से मुक्ति की। परमात्मा शिव इस युग में हमें फिर से याद दिला रहे हैं 'हे आत्मन, तू शरीर नहीं, शुद्ध, शांत, शक्तिशाली आत्मा हैं। यह स्मृति ही वह प्रथम क्रांति है, जो सच्ची आज़ादी की राह खोलती है। राजयोग ध्यान वह युक्ति है जो आत्मा को फिर से उड़ना सिखाता है। मन पर विजय, इंद्रियों पर संयम और कर्म में मर्यादा, यही है स्वराज्य जो केवल राजा-महाराजाओं का अधिकार नहीं, बल्कि हर आत्मा की जन्मसिद्ध शक्ति है। आज ज़रूरत है संस्कारों में स्वतंत्रता लाने की। सड़कें नहीं, संवेदनाएँ स्वतंत्र हों। बोलने की नहीं, सोचने की आज़ादी हो। क्योंकि जब आत्मा भीतर से आज़ाद होती है, तब देश की आत्मा जाग उठती है। इस स्वतंत्रता दिवस पर आइए, केवल राष्ट्रगान न गाएं, आत्मगान भी गाएं।

बोध कथा/जीवन की सीख

हर बुराई में अच्छाई खोज सकते हैं

एक शिष्य अपने गुरु से सप्ताह भर की छुट्टी लेकर अपने गांव जा रहा था। तब गांव पैदल ही जाना पड़ता था। जाते समय रास्ते में उसे एक कुआं दिखाई दिया। शिष्य प्यासा था, इसलिए उसने कुएं से पानी निकाला और अपना गला तर किया। शिष्य को अद्भुत तृप्ति मिली,

क्योंकि कुएं का जल बेहद मीठा और ठंडा था। शिष्य ने सोचा – क्यों ना यहां का जल गुरुजी के लिए भी ले चलूं। उसने अपनी मशक भरी और वापस आश्रम की ओर चल पड़ा। वह आश्रम पहुंचा और गुरुजी को सारी बात बताई। गुरुजी ने शिष्य से मशक लेकर जल पिया और संतुष्टि महसूस की। उन्होंने शिष्य से कहा- वाकई जल तो गंगाजल के समान है। शिष्य को खुशी हुई। गुरुजी से इस तरह की प्रशंसा सुनकर शिष्य आज्ञा लेकर अपने गांव चला गया। कुछ ही देर में आश्रम में रहने वाला एक दूसरा शिष्य गुरुजी के पास पहुंचा और उसने भी वह जल पीने की इच्छा जताई। गुरुजी ने मशक शिष्य को दी। शिष्य ने जैसे ही घूंट भरा, उसने पानी बाहर कुल्ला कर दिया।

शिष्य बोला- गुरुजी इस पानी में तो कड़वापन है और न ही यह जल शीतल है। आपने बेकार ही उस शिष्य की इतनी प्रशंसा की। गुरुजी बोले- बेटा, मिठास और शीतलता इस जल में नहीं है तो क्या हुआ। इसे लाने वाले के मन में तो है। जब उस शिष्य ने जल पिया होगा तो उसके मन में मेरे लिए प्रेम उमड़ा। यही बात महत्वपूर्ण है। मुझे भी इस मशक का जल तुम्हारी तरह ठीक नहीं लगा। पर मैं यह कहकर उसका मन दुखी करना नहीं चाहता था। हो सकता है जब जल मशक में भरा गया, तब वह शीतल हो और मशक के साफ न होने पर यहां तक आते-आते यह जल वैसा नहीं रहा, पर इससे लाने वाले के मन का प्रेम तो कम नहीं होता है ना।

संदेश : दूसरों के मन को दुखी करने वाली बातों को टाला जा सकता है और हर बुराई में अच्छाई खोजी जा सकती है। जब हम बुराई में भी अच्छाई खोजने लगते हैं तो हमारा नजरिया और दृष्टिकोण चीजों और जीवन के प्रति सकारात्मक हो जाता है। मन शक्तिशाली हो जाता है। जीवन में आने वाली कठिन से कठिन परिस्थिति आसान हो जाती है। जीवन में आनंद ही आनंद हो जाता है।

मेरी कलम से

गोबिंद बहादुर टुमबांग, पूर्व राज्यपाल, कोशी, नेपाल सरकार

आत्म चिंतन और आत्म विश्लेषण की यात्रा है 'राजयोग मेडिटेशन'

राजयोग सीखने के बाद बदल गई जीवन की दिशा

शिव आमंत्रण, आबू रोड, राजस्थान।

जब से मैंने ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़कर सात दिन का राजयोग मेडिटेशन का कोर्स किया है मेरी जीवन की दिशा और दशा दोनों बदल गई हैं। मेरे सोचने का नजरिया बदल गया है। अब खुद और समाज के प्रति पूरी तरह से दृष्टिकोण सकारात्मक हो गया है। कभी भी तनाव नहीं होता है। मन भारी नहीं होता है। सदा खुशी में मग्न रहता हूं। मेरे जीवन का अनुभव है कि ब्रह्माकुमारीज़ में दिए जा रहे राजयोग मेडिटेशन को सभी को सीखना चाहिए। खासकर युवा पीढ़ी को आज इसकी बेहद आवश्यकता है। राजयोग ध्यान की ऐसी पद्धति है जिसमें व्यक्ति अपने स्व की ओर ओर, अपने अंतर्जगत की ओर, अपने अंदर की ओर आत्म विश्लेषण, आत्म निरीक्षण करता है। राजयोग से हमें अपनी कमी-कमजोरियों और शक्तियों का एहसास होता है। मन सशक्त और मजबूत हो जाता है। राजयोग अपने अंदर की यात्रा है। खुद को जानने, समझने की यात्रा है।

आज की दुनिया बॉडी कॉन्सियशनेस (देहभान) में इतनी डूब गई है कि वह अपनी वास्तविक पहचान, अपनी आत्मा की पहचान को भूल गई है। देहभान के कारण ही दुनिया अहंकार, क्रोध, लोभ, मोह में डूबती जा रही है। इसी कारण से सभी समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। वास्तव में हम सभी आत्माएं हैं। सभी दिव्य आत्माएं हैं। आत्मा प्रेम स्वरूप है, शांत स्वरूप, आनंद स्वरूप है। जब हम आत्मा की पहचान को जानते हैं तभी परमात्मा को पहचान सकते हैं। बिना आत्मा को जाने, हम परमात्मा को यथार्थ रीति से नहीं जा सकते हैं। आत्मिक रूप की स्मृति से हमारा एक-दूसरे के प्रति दया, प्रेम, स्नेह और सहयोग का भाव रहता है। आध्यात्मिकता के समावेश से ही समाज में समृद्धि, खुशहाली और शांति आएगी।

जब मैं कोशी में राज्यपाल था, तब एक बार विराटनगर ऑफिस में ब्रह्माकुमारी बहनों का आना हुआ। उस दौरान ब्रह्माकुमारी बहनों से आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा की। इसके बाद मैंने, पत्नी के साथ सात दिन का राजयोग मेडिटेशन कोर्स किया। मैं वर्षों से ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में हूं। इन बहनों की त्याग-तपस्या, सेवा साधना और समर्पण भाव अद्भुत है। साक्षात् में यह देवी स्वरूपा ब्रह्माकुमारी बहनें समाज को नई दिशा दे रही हैं। समाज को नकारात्मकता से सकारात्मकता की ओर जाने की सेवा में दिन-रात समर्पित हैं। संस्थान सामाजिक क्षेत्र में भी बहुत ही सराहनीय कार्य कर रही है। संस्थान का मुख्यालय माउंट आबू अपने आप में अद्भुत है। यहां के पवित्र और शांतिमय वातावरण में मन सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर हो जाता है। संस्थान का मैनेजमेंट काबिलेतारीफ है। अध्यात्म के बल से ही दुनिया में शांति और एकता संभव है।

उत्तिष्ठ भारत: मां भारती पुकारती...

जीवन का मनोविज्ञान

भाग - 85

- डॉ. अजय शुक्ला, बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल, ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

राष्ट्रीयता के बोध से भरे हुए हम सभी जन क्या ...? स्वतंत्रता दिवस के महान अवसर पर भारत की अखंडता को बनाए रखने के लिए अंत:करण से इस भाव , विचार एवं आत्म जगत को अभिव्यक्त कर पाएंगे..? जिससे हमारी स्मृतियों में सदैव यह झंकृत स्वरूप में बना रहे कि आखिर मैंने राष्ट्र को क्या दिया...? कर्म प्रधान विश्व रचि राखा... की गरिमा आज मानव बोध का प्रश्न आखिर क्यों बन गया है...? राष्ट्र के प्रति जागृत भाव किसी एकांत स्थिति का द्योतक नहीं है बल्कि वह तो जीवन के गुणात्मक स्वरूप को उद्दीप्त करने वाला सफल पक्ष है जो अंत:करण की परिशुद्धता को मानव हृदय में बसाए रखने का सात्विक साधन बनकर, साध्य के प्रति कल्याणकारी दृष्टिकोण बनाए रखने में मददगार साबित होता है। संपूर्ण विश्व के नवनिर्माण में विश्व गुरु की महानतम भूमिका का निर्वहन भारत भाग्य विधाता की महान कल्पनाशीलता, सृजनात्मक परंपरा एवं नवाचारी दृष्टिकोण द्वारा ही पूर्णरूपेण संभावित एवं सुनिश्चित है जिसमें सर्व मानव आत्माओं के उत्कर्ष में नैसर्गिक जागृति से उन्नतशील परिवर्तित, परिमार्जित, परिवर्धित और परिष्कृत' स्वरूप की व्यावहारिकता में परिणित होकर ही हम भारत के भाग्यशाली लोग राष्ट्र उत्थान के परिदृश्य एवं परिवेश में राष्ट्रहित के लिए सर्वस्व न्योछावर अर्थात स्वयं को आत्मार्पित करते हैं।

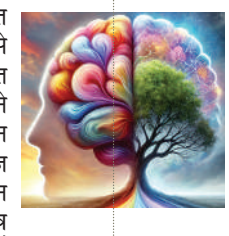

उज्जवल चरित्र की व्यावहारिक पक्षधरता: भारतीय जनतंत्र का अंत:करण सुप्रभात की मंगल बेला में अभिप्रेरणात्मक शक्ति संचार की अनुभूति के साथ उत्तिष्ट भारत के रहस्य को अपनी मनःस्थितियों से स्वीकार कर चुका है क्योंकि मां भारती की पुकार उसके जीवन तक पहुंच गई है और श्रेष्ठ नागरिक बोध ने अपनी सामर्थ्य शक्ति को समर्पण के मार्ग तक ले जाने का निश्चय कर लिया है क्योंकि यदि अब नहीं जागे तो राष्ट्र का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा और जब हमारी स्वतंत्रता का सबल पक्ष ही धराशाई हो जाएगा तो हम उसके पश्चात जीवन जीकर भी क्या करेंगे? जागृति का व्यावहारिक पक्ष कहीं ना कहीं से हमें कर्तव्यनिष्ठा की ओर ले जाता है जिसमें कर्म के प्रति संचेतना जागृत होना स्वाभाविक है परंतु मानवीय चिंतन का चैतन्य सकारात्मक पहलू , सदा साथ निभाते रहे इसके लिए आवश्यक है कि हम पूर्णत: कर्मनिष्ठ बन जाएं। राष्ट्र प्रेम के प्रति उद्दाम चरित्र की अभिव्यक्ति हमारे कृत्य द्वारा ही संपादित हो सकती है जिसे भावनात्मक पक्ष के सहारे उकेरना संभव प्रतीत नहीं होता क्योंकि भावनाओं के सानिध्य में सैद्धांतिक परिवेश का निर्माण तो किया जा सकता है लेकिन उसका क्रियान्वयन तो हमारे उज्जवल चरित्र का व्यवहार पक्ष ही मुखरित कर सकता है।

अखंड राष्ट्र की रक्षा में स्वयं का उत्सर्ग: मातृत्व की उदारता ने जब हमारे पालन-पोषण में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया तो उसकी पुकार को कैसे अनसुना किया जा सकता है? क्योंकि भारत मां की पुकार में संपूर्ण अस्तित्व ही समाहित है और उत्सर्ग का सौभाग्य किसी भी कीमत पर छोड़ा नहीं जा सकता। राष्ट्र ने हमें सब कुछ दिया है जिसकी अनुभूति के परिणाम को अंतरमन से हृदय में संजो लेना हम चाहते हैं जिससे कि यह बोध पूर्णत: स्पष्ट हो जाए कि मैंने राष्ट्र को संपूर्ण जीवन काल में क्या दिया है?

राष्ट्रीय चेतना का संपूर्ण चैतन्य स्वरूप

कर्तव्यनिष्ठा का आत्म संतोष हमारे लिए गौरव की बात बन जाए तब कहीं जाकर राष्ट्र के विकासात्मक परिपेक्ष्य में अपनी सहभागिता की सुनिश्चितता संपूर्ण रूप से निर्धारित की जा सकती है। हमारे आत्म तत्व को केवल भारत मां की पुकार ही राष्ट्रीय चेतना के स्वरूप में झंकृत कर सकती है जिसकी अनुभूति न केवल आंतरिक रूप में बल्कि बाह्य क्रियाकलापों में भी सहज ही परिलक्षित होती रहती है। अब प्रश्न उठता है कि राष्ट्र के लिए हमारे समर्पण का स्वरूप क्या हो? हमें कौन सा पक्ष विशेष रूप से अभिप्रेरित करता है? क्या हम सोचते हैं कि एक बार में जो है वैसे ही न्योछावर हो जाएं? समर्पण के प्रति हमारी स्वीकृतियां किस सीमा तक जा सकती हैं? क्या अधिकार एवं कर्तव्य के प्रति हमारी सजगता समान रूप से भाव और विचार जगत को प्रस्तुत कर पाती है? कर्म प्रधान विश्व रचि राखा...की गरिमा आज मानव बोध का प्रश्न आखिर क्यों बन गया है? राष्ट्र के प्रति जागृत भाव किसी एकांत स्थिति का द्योतक नहीं है बल्कि वह तो जीवन के गुणात्मक स्वरूप को उद्दीप्त करने वाला सफल पक्ष है जो अंत:करण की परिशुद्धता को मानव हृदय में बसाए रखने का सात्विक साधन बनकर, साध्य के प्रति कल्याणकारी दृष्टिकोण बनाए रखने में मददगार साबित होता है। उत्सर्ग के लिए आतुर हृदय कुछ भी समझने को तैयार नहीं है क्योंकि मातृत्व की उदारता ने हमारे निर्माण में सर्वस्व ही न्योछावर कर दिया जिसमें तथाकथित प्रश्नों की बौछार नहीं थी और आज जब मेरी बारी आई तो मैं प्रश्न वाचक चिंह की ओट में कैसे छिपकर बैठ जाऊं? जननी के प्रति उत्तरदायित्वपूर्ण विश्वास का प्रकटीकरण निश्चित ही हमें शक्ति संपन्न बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ेगा केवल राष्ट्र रक्षा के यज्ञ में स्वयं की समिधा को श्रद्धापूर्वक अर्पित करने की आवश्यकता है।

धन-धान्य से परिपूर्ण राज्यों के राजाओं की तुलना उस एक चींटी से नहीं की जा सकती है जिसका हृदय ईश्वर भक्ति से भरा हो।

- गुरुनानक देव जी

अपने मन, वचन तथा कर्म से हिंसा नहीं करनी चाहिए। अहिंसा ही परम ब्रह्म है, अहिंसा ही सुख-शांति देने वाली है।

- महावीर स्वामी जी

युवाओं से लेकर बुज़ुर्गों ने सीखीं

पत्रकारिता की बारीकियां

MADHUBAN न्यूज़

- मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता को बढ़ावा देने के लिए मधुबन न्यूज़ की नई पहल
- नेशनल इलेक्ट्रानिक मीडिया ट्रेनिंग में भाग लेने देशभर से पहुंचे लोग
- प्रशिक्षु पत्रकारों को प्रेस आईडी कार्ड और प्रमाण पत्र प्रदान किए

शिव आमंत्रण, आबूरोड।

मूल्यनिष्ठ और सकारात्मक पत्रकारिता को बढ़ावा देने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ ने नई पहल शुरू की है। इसके लिए बाकायदा युवाओं से लेकर बुजुर्गों को पत्रकारिता की बारीकियां सिखाकर समाज में सकारात्मक खबरों को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मनमोहिनीवन परिसर स्थित ग्लोबल ऑडिटोरियम में मधुबन न्यूज़ द्वारा चार दिवसीय नेशनल इलेक्ट्रानिक मीडिया ट्रेनिंग आयोजित की गई। इसमें देशभर से पहुंचे 300 से अधिक युवा से लेकर बुजुर्ग ब्रह्माकुमार भाई-बहनों को समाचार लेखन से लेकर तकनीक, विधि, टीवी रिपोर्टिंग, एंकरिंग का प्रशिक्षण दिया गया। समापन पर सभी को प्रेस आईडी कार्ड और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

मीडिया सबसे सशक्त माध्यम

समाज को शिक्षित, जागरूक और सूचना देने के लिए मीडिया ही सबसे सशक्त माध्यम है। आप सभी यहां से पत्रकारिता का प्रशिक्षण लेकर परमात्म ईश्वरीय संदेश, मूल्यनिष्ठ शिक्षा और सनातन संस्कृति के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का माध्यम बनें। हमें भारत को विश्वगुरु बनाना है। फिर से सनातन संस्कृति लाना है। सभी को यह बताना जरूरी है कि हम सभी आत्माएं हैं। सभी ज्योति स्वरूप, निराकार परमपिता परमात्मा की संतान हैं। श्रेष्ठ कर्मों से ही दुनिया में परिवर्तन आएगा। श्रेष्ठ कर्म का आधार राजयोग है।

– बीके करुणा भाई, अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

खबर वही जिससे खुशी मिले

आज सोशल मीडिया बहुत फास्ट न्यूज़ है लेकिन उसमें लोगों तक गलत जानकारी ज्यादा फैल जाती है। इसलिए आप सभी ज्यादा से ज्यादा सकारात्मक न्यूज़ फैलाएं। हमारी खबर से लोगों को खुशी मिले वहीं सही खबर है। पवित्रता, शांति और सत्यता ही हमारी पहचान है। मीडिया के माध्यम से लोगों तक सही जानकारी, सकारात्मक जानकारी पहुंचाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं।

– डॉ. बीके मृत्युंजय भाई, अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

हर दिन कुछ नया सीखें

आपके शब्द आपके व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। यदि हमने कल से ज्यादा आज ज्ञान हासिल नहीं किया है तो हमें अपनी आत्मा से पूछना चाहिए। हमारा दायित्व है कि हमने जो सीखा है, उस ज्ञान को संसार तक दे सके। शब्द ब्रह्म हैं। हमारा नजरिया कैसा है, यह तय करता है कि हम कहां पहुंचेंगे। आप यहां आए हैं लेकिन यहां से परिवर्तन करके आपको जाना है। वह देश शक्तिशाली नहीं है, जिसके पास असलार, गोला, बारूद हैं। वह देश शक्तिशाली है जिसके मीडिया सशक्त है। कई ऐसी निजी कंपनियां हैं जिनके अपने स्टोर नहीं हैं, लेकिन आज उनका कारोबार पूरी दुनिया में चल रहा है। माध्यम का जीवन में सबसे अहम रोल होता है।

– नारायण बारेठ, बीबीसी के पूर्व संवाददाता व वरिष्ठ पत्रकार, जयपुर

संवेदनशील होना जरूरी

जब हम पत्रकार बनने की प्रक्रिया में होते हैं तो हमें यह सिखाया जाता है कि हमें हर बात जिम्मेदारी से कहनी, बोलनी और लिखनी चाहिए। पत्रकार को सबसे ज्यादा संवेदनशील होना चाहिए। उसे हर बात का ज्ञान होना चाहिए। कब, कहा, क्या कहना है, कैसे कहना है, यह कला पत्रकार को आना चाहिए। पत्रकार का समाज के प्रति बड़ा दायित्व और जिम्मेदारी होती है। आप सभी रूहानी पत्रकार बनकर पूरे देश में शक्ति, शांति और आध्यात्मिकता का संदेश देने के माध्यम बनें।

– प्रियंका कौशल, स्टेट एडिटर, भारत एक्सप्रेस, रायपुर

अब लोग सकारात्मक खबरें देखना और पढ़ना चाहते हैं-

आध्यात्मिक मीडिया की शक्ति बढ़ती जा रही है। आज आध्यात्मिक न्यूज़ का जमाना है। अब लोग निगेटिव न्यूज़ से ऊब रहे हैं और सकारात्मक खबरें पढ़ना, देखना और सुनना चाहते हैं। जब मैंने ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान को समझा, अध्यात्म को समझा तो जिंदगी पूरी तरह से बदल गई। यदि मास मीडिया का दृष्टिकोण आध्यात्मिक हो जाए तो समाज बदल जाए। आज दुनिया के हालात को देखते हुए दुनिया को एक करने के लिए स्प्रीचुअल होना ही एकमात्र उपाय है।

– राजेश असनानी, एसोसिएट एडिटर, न्यू इंडियन एक्सप्रेस, जयपुर

उम्मीद की लहर पैदा करें-

मीडिया का दुनियाभर में आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका है। मीडिया से जन-जन को समाज में हो रहे सकारात्मक कार्यों की जानकारी मिलती है। मीडिया के माध्यम से लोगों को सृष्टि चक्र, परमात्मा का संदेश और राजयोग के बारे में बताएं, ताकि तनाव के दौर से गुजर रहे समाज में आशा, उम्मीद और सकारात्मक की लहर बन सके।

– राजयोगिनी बीके ऊषा दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका व गीता विशेषज्ञ, ब्रह्माकुमारीज़

इस ज्ञान को सेवा में उपयोग करें

आप सभी ने जो पत्रकारिता की बारीकियां सीखीं, समझीं हैं, इस जानकारी और ज्ञान का उपयोग अपने-अपने सेवा स्थान पर जाकर समाज में सकारात्मक खबरों को लोगों तक पहुंचाने में करें। एक अच्छा पत्रकार हमेशा सजग, सचेत रहता है। हमेशा अपडेट रहें और अपने ज्ञान में वृद्धि करते रहें। पत्रकारिता से हमारे अंदर आत्म विश्वास जागता है। हमारा व्यक्तित्व निखर जाता है।

– बीके कोमल भाई, एडिटर, मधुबन न्यूज व पीआरओ, ब्रह्माकुमारीज़

ट्रेनिंग में इन्होंने भी दिए पत्रकारिता के टिप्स

- बीके गंगाधर भाई ने मूल्यनिष्ठ और सकारात्मक पत्रकारिता को बढ़ावा देने पर जोर दिया।
- रायपुर के वरिष्ठ पत्रकार विशाल यादव ने समाचार लेखन के मूलभूत सिद्धांत, विधि पर तकनीक पर प्रकाश डाला।
- वरिष्ठ पत्रकार बीके पुष्पेंद्र ने मीडिया रिलेशन, समाचार लेखन, फीचर लेखन के बारे में बताया।
- भोपाल जोन की मीडिया संयोजिका डॉ. बीके रीना दीदी ने संचालन करते हुए मीडिया सेवाओं के बारे में बताया।
- मधुबन न्यूज के ब्यूरो चीफ बीके रावेंद्र ने टेक्निकल जानकारी दी।
- बीके पूजा बहन, बीके शिवांगी बहन और बीके तुलसी बहन ने मधुबन न्यूज में न्यूज भेजने की प्रक्रिया, शार्ट्स लेने की विधि आदि के बारे में बताया।

टीवी न्यूज बनाने की प्रक्रिया

- **शॉट्सः** किसी कार्यक्रम के अलग-अलग 30 सेकंड के शॉट्स लें। जैसे- 30 सेकंड स्टेज, अतिथि का वक्तत्व, पब्लिक, कार्यक्रम का बैनर आदि के शॉट्स लिए जा सकते हैं।

बाइटः बाइट का शॉट्स 30 सेकंड से ज्यादा का न हो। जिसकी बाइट ले रहे हैं उसका नाम, पद, स्थान का उल्लेख स्क्रिप्ट में जरूर करें।

- **टिक-टैकः** घटना स्थल या मौके पर रिपोर्टर और व्यक्ति के मध्य संवाद को टिक-टैक कहते हैं। फुटेज दो मिनट से ज्यादा का न हो।
- **वॉक थ्रूः** रिपोर्टिंग के दौरान घटनास्थल पर चलते हुए रिपोर्टिंग करना, क्या हो रहा है, कैसे हो रहा है का विवरण ही वॉक थ्रू कहलाता है।
- **पीटीसी (पीस टू कैमरा):** पीटीसी के माध्यम से मौके पर ही रिपोर्टर घटना के संबंध में विवरण पेश करता है उसे पीटीसी कहते हैं।

समाजसेवा प्रभाग का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

अध्यात्म के बिना अंदर की चेतना को जगाना संभव नहीं है : राज्य मंत्री केके विश्नोई

शिव आमंत्रण, आबूरोड।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के समाजसेवा प्रभाग द्वारा आनंद सरोवर परिसर में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन एवं रिट्रीट का समापन हो गया। सम्मेलन समाज की समृद्धि में आध्यात्मिकता की भूमिका विषय पर आयोजित किया गया। इसमें भारत सहित नेपाल से एक हजार से अधिक समाजसेवियों ने भाग लिया।

समापन समारोह में राजस्थान सरकार के उद्योग एवं वाणिज्य, युवा मामले एवं खेल, कौशल नियोजन, उद्यमिता एवं नीति निर्माण विभाग के राज्य मंत्री व जिले के प्रभारी मंत्री केके विश्नोई ने कहा कि हमारी पार्टी अध्यात्म को बढ़ावा देने के लिए कार्य कर रही है। समाज में तेज गति से बढ़ते इस दौर में आज हम अध्यात्म को भूलते जा रहे हैं। अध्यात्म जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है। ब्रह्माकुमारीज़ लगातार सिर्फ आबू ही नहीं बल्कि पूरे राज्य और देशभर में व्यापक स्तर पर जन-जन तक लोगों को आध्यात्मिक संदेश पहुंचा रही है। संस्थान हर वर्ग के उत्थान के लिए सेवा कार्य कर रही है। यहां समय प्रति समय अनेक राष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है। प्रतिस्पर्धा के इस दौड़ में अक्सर युवा साथी गलत कदम उठा लेते हैं। संस्थान आने वाले समय में स्कूल-कॉलेज में भी ऐसे मोटिवेशनल आयोजन करे, ताकि विद्यार्थियों को लाभ मिल सके। आज समाज में लोगों को सकारात्मक दिशा में अभिप्रेरणा की बहुत आवश्यकता है। यहां देश-विदेश से लोग एक ही उद्देश्य लेकर पहुंचे हैं कि समाज की समृद्धि में आध्यात्मिकता की महती भूमिका में शामिल हुए हैं।

त्याग-तपस्या से सेवा कठिन नहीं लगती है

अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती दीदी ने कहा कि जब जीवन में त्याग और तपस्या की भावना होती है तो हम दूसरों की सेवा बेहतर तरीके से कर पाते हैं। परमात्मा कहते हैं कि तुम सभी मनुष्य आत्माएं मेरे बच्चे हो। परमात्मा हम सबको कोई तकलीफ नहीं देते हैं। हम अपने कर्मों के अनुसार ही सुख-दुख पाते हैं। परमात्मा कहते हैं अपनी इच्छाओं को त्यागकर अपने मन-बुद्धि को मुझ एक परमात्मा में लगाओ। जब हम अपनी बुद्धि के समर्पण से परमात्मा पर अर्पित हो जाते हैं तो हैं परमात्म शक्ति की महसूसता होने लगती है। हमें परमात्म प्यार में त्याग-तपस्या और सेवा कठिन नहीं लगती है, बल्कि वह आसान हो जाती है। अतिरिक्त महासचिव राजयोगी बीके करुणा भाई ने कहा कि आप सभी जब यहां से जाएंगे तो जीवन में सुखी रहने का एक मंत्र लेकर जाएंगे।

लोगों का जीवन बदलना, सबसे बड़ी सेवा

अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी ने कहा कि समाज की सबसे बड़ी सेवा लोगों को परमात्मा का ज्ञान देकर उनके अंदर की बुराइयों से मुक्त करना है। किसी का जीवन दिव्य बना देना, जीवन को बदल कर सत्मार्ग पर ले जाना, सबसे महान कार्य है। संयुक्त मुख्य प्रशासिका व समाजसेवा प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा राजयोगिनी बीके संतोष दीदी ने कहा कि जब मन ईश्वर में लग जाता है, हम ईश्वर से अतीद्रिंय सुख की अनुभूति कर लेते हैं तो मन शांत हो जाता है। हमारा जीवन दुआओं से भरपूर हो जाता है। जीवन में ज्यादा से ज्यादा दुआएं लेने का प्रयास करते रहें।

सृष्टि परिवर्तन का समय

प्रभाग के उपाध्यक्ष गुलबर्गा के बीके प्रेम भाई ने कहा कि अभी संगमयुग चल रहा है। परमपिता शिव परमात्मा आकर के मनुष्य आत्माओं को पावन बना रहे हैं। उत्तराखंड श्रीनगर गहरवाल के राष्ट्रीय संयोजक बीके मेहरचंद भाई ने कहा कि आंतरिक सेवा सर्वोत्तम सेवा है।

इन्होंने भी किया संबोधित

प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके अवतार भाई, कानपुर दिल्ली की बीके आशा दीदी, मप्र भोपाल जोन की संयोजिका बीके शैलजा दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। मधुरवाणी ग्रुप के कलाकारों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। महाराष्ट्र के अमरावती से आए कलाकारों ने स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया। संचालन अतिरिक्त राष्ट्रीय संयोजिका बीके वंदना दीदी व पश्चिम विहार दिल्ली की बीके सरिता बहन ने किया। उप्र गोरखपुर की प्रभाग की क्षेत्रीय समन्वयक बीके पारुल बहन ने राजयोग मेडिटेशन से गहन शांति की अनुभूति कराई किया। आभार मुख्यालय संयोजक बीके बीरेंद्र भाई ने माना।

आज की दुनिया बॉडी कॉन्सियशनेस (देहभान) में इतनी डूब गई है कि वह अपनी वास्तविक पहचान, अपनी आत्मा की

पहचान को भूल गई है। आत्मिक रुप की स्मृति से हमारा एक-दूसरे के प्रति दया, प्रेम, स्नेह और सहयोग का भाव रहता है। आध्यात्मिकता के समावेश से ही समाज में समृद्धि, खुशहाली और शांति आएगी। कोशी में राज्यपाल रहते विराटनगर ऑफिस में ब्रह्माकुमारी बहनों का आना हुआ। राजयोग से मेरे जीवन में बहुत बड़ा बदलाव आया है। **-गोबिंद बहादुर टुमबांग, पूर्व राज्यपाल, कोशी, नेपाल सरकार**

हमने भौतिक रुप से बहुत उपलब्धियां हासिल की हैं, लेकिन आज वैश्विक परिस्थितियां बड़ी नाजुक हैं। हम युद्ध

की कगार पर खड़े हैं। ऐसा कार्य करें जिससे स्वयं के मन को खुशी, संतुष्टि मिले। आपके द्वारा किया गया ऐसा कार्य जो दूसरों को खुशी दे, सबसे बड़ी सेवा है। संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी से एक बार लंदन में मिलना हुआ, उनकी सादगी और सरलता देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ। **- घनश्याम मेहता, स्ट्रेटेजिक मैनेजमेंट एडवाइजर, दामोदर चेरिटेबल ट्रस्ट, मुंबई**

ब्रह्माकुमारीज़ रक्तदान महाअभियान का बनाएगी गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड

17 अगस्त को दिल्ली में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा करेंगे महाअभियान का राष्ट्रीय शुभारंभ

25 अगस्त तक देशभर में आयोजित होंगे रक्तदान शिविर

शिव आमंत्रण, आबूरोड।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि (25 अगस्त) विश्व बंधुत्व दिवस के उपलक्ष्य में संस्थान द्वारा राष्ट्रीय रक्तदान महाअभियान चलाकर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड बनाया जाएगा। संस्थान के देशभर में स्थित छह हजार से अधिक सेवाकेंद्रों पर एकसाथ 18 से 25 अगस्त 2025 के बीच विशाल रक्तदान शिविर आयोजित किए जाएंगे। इसे लेकर मुख्यालय शांतिवन से व्यापक स्तर पर रूपरेखा बनाई गई है। अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने कहा कि रक्तदान महाअभियान में सभी मेडिकल मानकों को फॉलो करते हुए पूरी सावधानी के साथ शिविर लगाए जाएंगे। सभी

सेवाकेंद्र ज्यादा से ज्यादा लोगों को रक्तदान करने के लिए प्रेरित करें। वरिष्ठ राजयोगी बीके प्रकाश भाई ने बताया कि 17 अगस्त को नई दिल्ली में केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जेपी नड्डा रक्तदान महाअभियान का राष्ट्रीय शुभारंभ करेंगे। इसके साथ ही देशभर में रक्तदान शिविरों की शुरुआत हो जाएगी। समाज सेवा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके अवतार भाई ने कहा कि इस महाअभियान से जुड़ने के लिए सभी लोगों से अपील करें।

व्यापक स्तर पर की जा रही हैं तैयारियां-

समाज सेवा प्रभाग के प्रो. ईवी गिरीश ने बताया कि यह रक्तदान शिविर भारत के अलावा नेपाल में स्थित ब्रह्माकुमारीज़ के सभी सेवाकेंद्रों पर आयोजित किए जाएंगे। इसमें ब्रह्माकुमार भाई-बहनों के साथ स्थानीय लोग भी भाग लेंगे। पूरे अभियान को सफल बनाने के लिए व्यापक स्तर पर तैयारियां की जा रही हैं। जिला स्तर से लेकर बड़े शहरों में सामाजिक संगठन, रोटरी क्लब, लायंस क्लब और ब्लड बैंकों से संपर्क किया जा रहा है। 17 अगस्त को दिल्ली में राष्ट्रीय शुभारंभ होने के बाद देशभर के शहरों में रक्तदान शिविर आयोजित होंगे।

रक्तदान कौन कर सकता है-

18 से 65 वर्ष के बीच का कोई भी स्वस्थ व्यक्ति जिसका वजन कम से कम 50 किलोग्राम होना चाहिए वह रक्तदान कर सकता है। इसके अलावा दानदाता पूरी तरह से स्वस्थ और फिट होना चाहिए। उसे कोई गंभीर रोग जैसे हेपेटाइटिस, एचआईवी, मलेरिया, चर्मरोग, टाइफाइड, कैंसर बीमारी नहीं होना चाहिए। साथ ही पुरुषों में हीमोग्लोबिन कम से कम 13.0 ग्राम/डीएल और महिलाओं में कम से कम 12.5 ग्राम/डीएल होना जरूरी है। ब्लड प्रेशर सामान्य या नियंत्रित होना चाहिए (उच्च या बहुत निम्न ब्लड प्रेशर वाले व्यक्ति को रक्तदान नहीं करना चाहिए)। रक्तदान से पहले हल्का भोजन जरूर करना चाहिए। पुरुष हर तीन महीने में और महिलाएं हर चार माह के अंतराल से रक्तदान कर सकते हैं।

दिल्ली @ लाल किला मैदान

विश्वभर में 30 लाख लोगों को दिया योग का संदेश

लाल किला मैदान में 20 हजार लोगों ने एक साथ किया योग

शिव आमंत्रण, आबूरोड/नई दिल्ली। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा 11वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर विश्वभर में 30 लाख से अधिक लोगों को योग, राजयोग का संदेश दिया गया। संस्थान के विश्व के 140 देशों में स्थित छह हजार सेवाकेंद्र, उपसेवाकेंद्रों, पाठशालाओं में योग कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्यालय शांतिवन के डायमंड हाल में कार्यक्रम आयोजित किया गया। वहीं देश की राजधानी दिल्ली में लाल किला मैदान में आयोजित विशाल योग कार्यक्रम में 20 हजार से अधिक लोगों ने भाग लिया। एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग विषय पर आयोजित यह मेगा कार्यक्रम आयुष मंत्रालय, मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान एवं भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के सहयोग से संपन्न हुआ। सर्व प्रथम, विशाखापट्टनम से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोगों को स्वस्थ यौगिक क्रिया एवं स्वच्छ जीवन शैली अपनाने की अपील की। उसके बाद, योग के कॉमन प्रोटोकॉल के अनुसार लाल किला मैदान में लोगों को योगासन एवं प्राणायाम एक्सरसाइज कराया गया। इस मौके पर लोकसभा के अध्यक्ष ओम बिरला, संस्था के महासचिव राजयोगी बृजमोहन भाई, ओआरसी की निदेशिका बीके आशा दीदी ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में दिल्ली, यूपी, हरियाणा सेवाकेंद्रों से भाई-बहनें भाग लेने के लिए पहुंचे थे।

> मन की शांति के साथ जीवन में कार्य कुशलता और जिंदगी के समग्र विकास के लिए योग व्यक्ति की दिनचर्या का हिस्सा बनना चाहिए। दुनिया के अंतिम छोर पर बैठे हुए व्यक्ति के जीवन के अंदर परिवर्तन लाने में संस्था ने काम किया है। इसी तरीके से समाज में अवसाद तनाव दूर कर शांति को लाने का काम कर रही है। ओम शांति का संदेश जब दुनिया के अंदर जाएगा तो लोगों के व्यक्तित्व विकास, सर्वांगीण स्वास्थ्य और कार्य कुशलता भी बढ़ेगी। ब्रह्माकुमारी विश्व की सबसे बड़ी बहनों द्वारा संचालित संस्था है, जो भारत की अध्यात्म और योग परंपरा को पूरे विश्व बढ़ाया है। शारीरिक योग से अधिक प्रभावशाली है मानसिक, बौद्धिक व आत्मिक योग, जिसे सहज राजयोग कहते हैं। इससे चिंता, अशांति, तनाव व अवसाद जैसी नकारात्मक स्थिति समाप्त हो जाती है और मानव सच्ची शांति, प्रसन्नता, आत्मविश्वास एवं सकारात्मक ऊर्जा से भर जाता है। मनुष्यों में बेहतरीन कार्य व व्यवहार कुशलता विकसित होता है।
>
> - ओम बिरला, अध्यक्ष, लोकसभा

दिल्ली @ लाल किला मैदान

कुरुक्षेत्र, हरियाणा। हरियाणा योग आयोग एवं योगगुरु बाबा रामदेव के मार्गदर्शन में आयोजित अंतराष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम में योगगुरु बाबा रामदेव, आचार्य बालकृष्ण, मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, सांसद नवीन जिंदल, पूर्व राज्यमंत्री सुभाष सुधा के साथ ब्रह्माकुमारी बहनों ने भाग लिया और योग पर अपने विचार व्यक्त किए।

आबूरोड। ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय शांतिवन के डायमंड हाल में भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय एवं ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग विषय पर आयोजित किया गया। इसमें देशभर से आए विभिन्न राज्यों लोगों ने योगगुरु के मार्गदर्शन में योग किया।

फैक्ट

- **6000** सेवाकेंद्र, उपसेवाकेंद्रों पर मनाया गया योग दिवस
- **30** लाख लोगों ने लिया भाग
- **5000** लोगों ने मुख्यालय के कार्यक्रम में लिया भाग
- **140** देशों में दिया योग का संदेश
- **20000** लोगों ने दिल्ली के लाल किला मैदान में आयोजित कार्यक्रम में लिया भाग

जिनेवा। संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी मिशन के साथ साझेदारी में ब्रह्माकुमारीज़, संयुक्त राष्ट्र के यूरोपीय मुख्यालय, पैलेस डेस नेशंस में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। इसमें अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी जयंती दीदी ने ब्रह्माकुमारीज़ का प्रतिनिधित्व किया।

मंगोलिया। भारतीय दूतावास ने उलानबटार स्थित एमएनसीसीआई हॉल में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया। इसमें बीके इन्ना ने राजयोग मेडिटेशन के बारे में में विस्तार से बताया। साथ ही सभी को राजयोग से गहन शांति की अनुभूति कराई।

व्यापार एवं उद्योग प्रभाग का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

शांति की शक्ति से आती है सत्यता और सभ्यता

शिव आमंत्रण, माउंट आबू

ब्रह्माकुमारीज़ के व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा 'राजयोग द्वारा व्यापार एवं उद्योग में आंतरिक शक्ति एवं बाह्य सफलता' विषय पर ज्ञान सरोवर परिसर में राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें भारत के विभिन्न प्रांतों से 400 से अधिक व्यापारी एवं उद्योगपतियों ने भाग लिया। भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक शांतनु रॉय ने कहा कि वर्तमान समय में हर उम्र के लोगों में तनाव बहुत गंभीर चिंता का विषय बन गया है। उन्होंने यह भी बताया कि सोशल मीडिया और इंटरनेट भी आज मानसिक तनाव का कारण बन गए हैं। संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके सुदेश दीदी ने कहा कि शांति की शक्ति हममें धैर्यता, गंभीरता, सत्यता और सभ्यता के सद्गुण जागृत करती है। व्यापारीयों को बिज़ी रहते इजी रहना माना सहज रहना, यह आध्यात्मिकता हमें सिखाती है। व्यापार एवं उद्योग प्रभाग के अध्यक्ष बीके एमएल शर्मा ने सभी का स्वागत किया। राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. हरीश भाई, मुख्यालय संयोजिका बीके गीता दीदी, बीके मोहन भाई, बीके अमृता बहन ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

जबलपुर, मप्र। कटंगा कॉलोनी सेवाकेंद्र शिव उपहार भवन द्वारा विश्व एकता और विश्वास के लिए ध्यान कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें माउंट आबू से पधारे बीके सूरज भाई, बीके गीता दीदी, महामंडलेश्वर अखिलेश्वरानन्द गिरी महाराज, सांसद आशीष दुबे, संचालिका बीके विमला दीदी ने उपरोक्त विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

ज्ञान सरोवर में महिला सम्मेलन आयोजित

शिव आमंत्रण, माउंट आबू। ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान सरोवर परिसर में राष्ट्रीय महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें मप्र की पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण विभाग राज्यमंत्री कृष्णा गौर ने कहा कि महिला आध्यात्मिक सशक्तिकरण का विषय संवाद का नहीं समाज के नवनिर्माण का मूल मंत्र है। यह सांस्कृतिक एवं आत्मिक जागरण का आह्वान है। सच्चा सशक्तिकरण बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक, आध्यात्मिक होता है। आज आधुनिकता और आध्यात्मिकता के बीच संतुलन बनाना आवश्यक है। राजयोग और आध्यात्मिक ज्ञान से ही महिलाएं आत्मबल और शांति प्राप्त कर सकती हैं। यही नारी सशक्तिकरण का वास्तविक मार्ग है।

भरतपुर से भारत की सबसे कम उम्र की सांसद संजना जाटव ने कहा कि महिला दुर्गा का रूप है। उसके अंदर धैर्यता, सहनशीलता का गुण है जिससे कठिन परिश्रम कर वह परिवार, समाज और देश की सेवा करती है। उन्होंने कहा कि परिवार के सहयोग से तथा सशक्त जीवन मूल्यों के कारण मैं आज यहां पर हूं। यहां आकर मुझे असीम शांति का अनुभव हुआ।

भाजपा महिला मोर्चा की राष्ट्रीय सचिव दीप्ति रावत भारद्वाज ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा महिला सशक्तिकरण का कार्य सराहनीय है। प्रधानमंत्री मोदी भी महिला नेतृत्व सशक्तिकरण की बात करते हैं। व्यक्तिगत जीवन से मैं समझती हूं कि आध्यात्मिक सशक्तिकरण के लिए यह दिव्य स्थान सबसे सर्वोत्तम है। महिला प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी चक्रधारी दीदी ने कहा कि समाज में फैले हुए विषय विकारों से मुक्ति दिलाने के लिए चंद बहनों ने अपना जीवन त्याग, तपस्या, सेवा द्वारा जगत माता का रूप लिया। दुर्गुणों, विकारों से मुक्त हुए बिना यह समाज ठीक नहीं हो सकता है। प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका बीके शारदा दीदी ने कहा कि महिला संस्कृति की संरक्षक है। आध्यात्मिक सशक्तिकरण ही जीवन की समस्या का समाधान है। नवी मुंबई से पधारे 'अंतर्योग फाउंडेशन' के संस्थापक आचार्य उपेंद्र, राष्ट्रीय संयोजिका बीके डॉ. सविता दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

शाश्वत यौगिक कृषि पर अनुसंधान के लिए डॉ. बालासाहेब सावंत कोंकण कृषि विश्वविद्यालय के साथ ब्रह्माकुमारीज़ ने साइन किया एमओयू

शिव आमंत्रण, दापोली (महाराष्ट्र)। ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा शाश्वत यौगिक कृषि विषय पर अनुसंधान के लिए डॉ. बालासाहेब सावंत कोंकण कृषि विश्वविद्यालय के साथ एमओयू साइन किया है। इसके तहत यौगिक खेती पर विश्वविद्यालय में विद्यार्थी शोध कार्य करेंगे। इस दौरान कुलपति डॉ. संजय भावे ने कहा कि भारत की संस्कृति प्राचीन है। अब किसान फिर से प्राकृतिक खेती की ओर रुख कर रहे हैं। आज जरूरत है कृषि में विज्ञान और अध्यात्म दोनों का सुंदर समन्वय स्थापित करने की। ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग और कोंकण कृषि विश्वविद्यालय के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर होना एक महान अवसर है। इस दौरान महाराष्ट्र कृषि एवं शैक्षणिक अनुसंधान परिषद पुणे के पूर्व उपाध्यक्ष डॉ. राम खर्चे, कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की राष्ट्रीय समन्वयक बीके सुनंदा दीदी, कृषि विद्यापीठ के अनुसंधान निदेशक डॉ. प्रशांत शहारे, शिक्षा निदेशक डॉ. सतीश नरखड़े, विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. मकरंद जोशी, सभी महाविद्यालयों के सह अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, प्राध्यापक एवं अधिकारी व प्रभारी बीके सारिका बहन मौजूद रहीं।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से ब्रह्माकुमारीज़ के यातायात एवं परिवहन प्रभाग के कार्यकारिणी सदस्यों ने मुलाकात कर प्रभाग द्वारा की जा रही सेवाओं के बारे में बताया। इस दौरान विंग की अध्यक्षा बीके दिव्यप्रभा दीदी, बीके संगीता दीदी, बीके सुरेश भाई, गायिका सिस्टर हरिना बहन सहित प्रभाग के सभी कार्यकारिणी सदस्य मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, देहरादून। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से ब्रह्माकुमारीज़ की सबजोन इंचार्ज राजयोगिनी बीके मंजू दीदी के नेतृत्व में भाई-बहनों ने मुलाकात कर स्वागत किया। साथ ही अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की शुभकामनाएं दी। इस दौरान बीके मीना दीदी, बीके सुशील भाई, बीके विजय भाई, बीके रजनी बहन, बीके प्रियंका बहन, बीके दीपिका बहन, बीके दीपशिखा बहन, बीके नीलम बहन मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, गोरखपुर, उप्र। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु के नगर आगमन पर सर्किट हाउस में ब्रह्माकुमारीज़ के प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की। इस दौरान बीके पुष्पा बहन, बीके मनोज बहन, बीके पारुल बहन, बीके सोनी बहन, बीके बहादुर भाई, बीके धर्मेश भाई उपस्थित रहे। इस दौरान बहनों ने राष्ट्रपति के संस्थान द्वारा की जा रहीं सेवाओं के बारे में बताया।

अटलादरा, गुजरात। ट्रेफिक नियमों के प्रति जागरूकता पर 'यात्री कृपया ध्यान दें' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें ट्रेफिक अवेयरनेस शॉर्ट फिल्म कंपटीशन द्वारा ट्रैफिक नियम पालन का संदेश दिया गया। इस दौरान विधायक चैतन्य देसाई, भाजपा प्रमुख जयप्रकाश सोनी, सीपी नरसिम्हा कोमार, ज्वाइंट सीपी लीना बेन पाटिल, डीसीपी ज्योति बेन पटेल मुख्य रूप से मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, इंदौर, मप्र। नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रालामंडल में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बीके नारायण भाई ने बताया कि जब आंतरिक मनोबल कमजोर होने लगता है तो युवा नशे शराब तंबाकू गुटका इनका सेवन कर अपने तनाव को कम करने की कोशिश करता है। बीके आशा बहन, बीके राकेश भाई ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

सेवानिवृत्त सैनिकों के लिए स्व सशक्तिकरण कार्यक्रम आयोजित

राजयोग जीवन को सरल, सहज और सफल बनाता है

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम

ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में सुरक्षा बलों के अधिकारियों के लिए तीन दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान एवं भूतपूर्व सैनिक अंशदायी स्वास्थ्य योजना (ईसीएचएस) के तत्वावधान में हुआ। कार्यक्रम का उद्देश्य स्वास्थ्य के साथ-साथ सेवानिवृत अधिकारियों एवं सैनिकों में मनोबल को बढ़ाना है। दीप प्रज्वलित कर सेल्फ एम्पावरमेंट एण्ड मेंटल वेल बींग विषय पर आयोजित सेमिनार का शुभारम्भ हुआ।

भारतीय नौसेना के पूर्व वाइस एडमिरल सतीश कुमार नामदेव घोरपड़े ने कहा कि वो काफी समय से संस्था से जुड़े हैं। उन्होंने कहा कि राजयोग जीवन को सरल, सहज एवं सफल बनाने की विधि सिखाता है। ईसीएचएस का ब्रह्माकुमारीज़ के साथ जुड़ने का प्रमुख कारण स्व सशक्तिकरण करना है। समस्याओं का हल बाहर नहीं बल्कि हमारे ही भीतर है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष बल देती है। मन के विचारों का प्रभाव ही शरीर पर पड़ता है। ईसीएचएस के संयुक्त निदेशक कर्नल राजीव ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ के साथ उन्होंने एमओयू पर हस्ताक्षर किए हैं।

आबूरोड, राजस्थान। नशामुक्त भारत अभियान के अंतर्गत मेडिकल विंग द्वारा मान सरोवर परिसर में राष्ट्रीय नशामुक्ति प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इसमें देशभर से 300 से अधिक डॉक्टर, सामाजिक कार्यकर्ता, युवा प्रतिनिधि एवं राजयोग शिक्षकों ने भाग लिया। इसमें प्रशिक्षकों ने नशे से ग्रसित लोगों की मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक और व्यावहारिक स्तर पर काउंसलिंग करने के टिप्स दिए।

जन जागरण का कार्य कर रही है संस्था : केंद्रीय मंत्री सोनोवाल

शिव आमंत्रण, तिनसुकिया, आसाम। ब्रह्माकुमारीज़, तिनसुकिया द्वारा पूर्वोत्तर भारत में अपनी आध्यात्मिक एवं सामाजिक सेवाओं की स्वर्ण जयंती मनाई गई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि केंद्रीय पोत, नौवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय तथा आयुष मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने दीप प्रज्वलित कर विश्व एकता और विश्वास के लिए ध्यान विषय कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

यह सेवा यात्रा वर्ष 1975 में तिनसुकिया से आरंभ हुई थी, जब बीके सत्यवती दीदी ने इस पावन धरा पर ईश्वरीय सेवाओं का बीज रोपा। समय के साथ यह सेवा एक वटवृक्ष के रूप में विकसित हुई, जिसकी शाखाएं असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड एवं मिजोरम तक फैल गईं। राजयोग ध्यान एवं आध्यात्मिक शिक्षाओं के माध्यम से हजारों लोगों को आंतरिक शांति, आत्म-परिवर्तन एवं श्रेष्ठ जीवनशैली का अनुभव हुआ। इस वर्ष तिनसुकिया उपक्षेत्र ने अपनी स्वर्ण जयंती वर्ष में प्रवेश किया, जिसका भव्य शुभारंभ पीस वैली रिट्रीट सेंटर में उत्सवपूर्वक मनाया गया।

इस दौरान केंद्रीय मंत्री सोनोवाल ने कहा कि इस युग में जनजागरण का कार्य ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा मातृशक्ति के माध्यम से सफलतापूर्वक किया जा रहा है। इस दौरान राहुल प्रशांत, कार्यकारी निदेशक, इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, डिगबोई रिफाइनरी, एवं माननीय संजय किशन विधायक भी मौजूद रहे।

महिला प्रभाग की राष्ट्रीय समन्वयक बीके शारदा दीदी, वैज्ञानिक, अभियंता एवं वास्तुविद प्रभाग के अध्यक्ष बीके मोहन सिंघल भाई ने अपनी प्रेरणास्पद वाणी से सबको गहराई से स्पर्श किया।

कार्यक्रम में पूर्वोत्तर के चार राज्यों असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड एवं मिजोरम में की जा रही ईश्वरीय सेवाओं का प्रतीकात्मक प्रस्तुतीकरण संबंधित राज्यों की ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा ईश्वरीय ध्वज एवं कलश के माध्यम से किया गया। आयोजन में लगभग 1500 लोगों ने भाग लिया। इस दौरान बालिकाओं ने सांस्कृतिक प्रस्तुति दी।

ईश्वरीय ज्ञान को अपनाकर जीवन को खुशनुमा बना सकते हैं

शिव आमंत्रण, वाराणसी, उप्र। जेसीआई शाहगंज सिटी द्वारा एक दिवसीय खुशनुमा ज़िंदगी और हारमोनी इन रिलेशनशिप सेमीनार आयोजित किया गया। इसमें ब्रह्माकुमारीज़ के क्षेत्रीय मुख्यालय सारनाथ, वाराणसी की मोटीवेशनल ट्रेनर बीके तापोशी दीदी ने कहा कि आत्मा के मौलिक गुणों की पहचान और स्व-अनुभूति से ही हम अपने जीवन में खुशहाली और आपसी संबंधों में मधुरता का अनुभव कर सकते हैं, क्योंकि खुशी और मधुरता वास्तव में आत्मा का मौलिक गुण हैं। स्व-अर्थात आत्मा की विस्मृति और देह एवं दुनिया के आकर्षण ने हमें अपने वास्तविक गुणों से दूर कर दिया है। अतः स्वयं को आत्मा समझ परमशक्ति, गुणों के सागर परमपिता परमात्मा शिव से अपने मन-बुद्धि का सम्बन्ध जोड़कर ही हम अपने जीवन को खुशनुमा और मधुर बना सकेंगे। आपने खुशहाल जीवन के लिए विशेष टिप्स देते हुए अनेक एक्टिविटी द्वारा उपस्थित लोगों के अन्दर नई ऊर्जा का संचार किया। साथ ही राजयोग द्वारा गहन शान्ति की अनुभूति भी कराई।

जेसीआई शाहगंज की प्रेजीडेंट दीपा सेठ ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ में सिखाया जाने वाला राजयोग साधना पद्धति और ईश्वरीय ज्ञान को जीवन में अपनाकर निश्चित रूप में हम अपने जीवन को खुशहाल और मधुर बना सकते हैं। जेसीआई के सेक्रेटरी आदित्य गुप्ता, प्रोग्राम डायरेक्टर उज्जवल सेठ ने भी संबोधित कर संस्था का आभार जताया। कार्यक्रम में स्थानीय शाखा प्रभारी बीके समिता दीदी, बीके रीता दीदी, बीके उषा दीदी, बीके अनिता दीदी का जेसीआई टीम ने स्वागत-सम्मान किया।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, ग्वालियर, मप्र। ग्वालियर के दत्तोपंत ठेंगड़ी सभागार, कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित 'सामाजिक समरसता' कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, भारत सरकार के केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने भाग लिया। इस दौरान मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री ने बीके रोशनी बहन, बीके सुरभि बहन, बीके डॉ.गुरचरण सिंह को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में धर्मगुरु, धार्मिक संस्थान, सामाजिक संस्थान के पदाधिकारी मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, वाराणसी, सारनाथ (उ.प्र.)। सुविख्यात कथावाचक स्वामी सुधीरानंद महाराज के सेवाकेंद्र पधारने पर ईश्वरीय ज्ञान चर्चा करती हुईं जोन निदेशिका राजयोगिनी बीके सुरेंद्र दीदी, राजयोगी ब्र.कु. दीपेंद्र भाई, विश्व हिंदू परिषद के आनंद पाण्डेय, बीके राधिका दीदी, बीके तापोशी दीदी।

शिव आमंत्रण, बैतूल, मप्र। अंतर्राष्ट्रीय नशा निवारण दिवस पर जिला सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा चलाए जा रहे नशा मुक्त भारत अभियान के समापन अवसर पर विवेकानंद सभागृह जेएच कॉलेज में नशा मुक्त के क्षेत्र में कार्य करने के लिए स्वयं सेवी संस्थाओं के साथ ब्रह्माकुमारीज़ को कलेक्टर द्वारा प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से बीके सविता बहन, बीके रोशनी बहन, बीके प्रदीप भाई उपस्थित रहे। बीके सविता बहन ने संस्था की गतिविधियों से सभी को अवगत कराया और प्रधान न्यायाधीश से प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

शिव आमंत्रण, अमरावती, महाराष्ट्र। राज्य के राजस्व मंत्री चन्द्रशेखर बावनकुले के नगर आगमन पर ब्रह्माकुमारीज़ अमरावती की प्रभारी बीके सीता दीदी ने शॉल पहनाकर और ईश्वरीय सौगात देकर सम्मानित किया। इस दौरान मंत्री बावनकुले ने अमरावती में तपस्या धाम रिट्रीट सेंटर के विकास के लिए एक करोड़ रुपये की राशि आवंटित की।

शिव आमंत्रण, निम्बाहेड़ा, राजस्थान। कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय में डिप्टी सीएम डॉ. प्रेमचंद बैरवा के आगमन पर ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शिवली दीदी ने परमात्मा शिव बाबा का प्रतीक उपहार स्वरूप भेंट कर स्वागत किया।

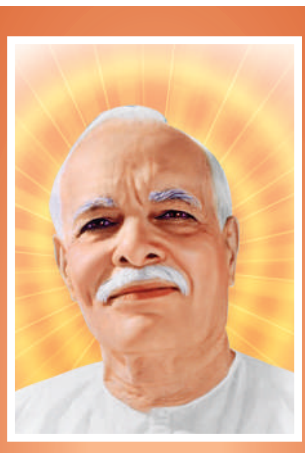

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा, संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, माउंट आबू

बुद्धि दिव्य नहीं हुई होगी तो परमात्मा के पवित्र ज्ञान रूपी अमृत को धारण कैसे कर सकेगी?

रियल लाइफ

जब मातेश्वरी सरस्वती का सेवार्थ कानपुर में हुआ पदार्पण

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

अब आबू में मातेश्वरी सरस्वती जी को स्थान-स्थान से जिज्ञासुओं द्वारा लिखे ऐसे पत्र प्राप्त होने लगे जिनमें बहुत ही स्नेह, विनय और आदर से यह निवेदन किया होता कि दिव्य गुणों की मूर्ति मां उनके नगर में पधारें और उनके जीवन में भी गुण भर दें। वे उन्हें लिखते 'मां, ओ प्यारी मां, अति मधुर मां, इस नगर में हम आपके बच्चे चिरकाल से आपकी राह देख रहे हैं कि हमारी दिव्य मां अभी आई-कि-आई। मां आपने देर क्यों लगाई है? शीतला मैय्या, आओ आपके आने से विकारों की अग्नि से जले इस नगर के जन-मन को शीतलता मिलेगी।

मां, आपके ज्ञान-वीणा वादन से अनेकों की सुषुप्त आत्मा जागेगी और उनमें एक नए दिव्य जीवन के लिए उमंग तथा तरंग भर जाएगी। मां, ये ज्ञान-सितारे, ज्ञान-चन्द्रमा के बिना शोभा नहीं देते इसलिए आप अपने इन रूहानी बच्चों के बीच पधारो मां! मांआपके दिव्य गुणों की ठण्डी छाँह से हम आत्माओं को वह आराम मिलेगा जो स्वर्ग में भी नहीं मिलता। आपकी ज्ञानभरी लोरी की आवश्यकता है मांक्योंकि अभी हम ज्ञान मिलने की आयु के हिसाब से छोटे बच्चे हैं...। बोलो, मां आप कब आ रही हैं...?'

इस प्रकार के आग्रह, अनुरोध, अनुनय-विनय भरे पत्र अथवा आह्वान के स्वर मां के पास नित्य पहुंचते रहते। मां उन्हें पढ़कर मुस्कुरा देतीं। जिज्ञासु भी चुप हो जाते। वे सोचते थे कि पवित्र मां जब यहां आयेंगी तो उनके लिए यहां ऐसा पवित्र वातावरण कहां है? यह तो माया नगरी है। यहां तो हर कपड़े से, हर कोने से विकारों की दुर्गन्ध आती है। मां ने तो कभी किसी आसुरी स्वभाव वाले व्यक्ति के घर पदार्पण किया ही नहीं, तो इस नगरी में उनका आह्वान करके मां को आने का कष्ट देना क्या उचित है? परन्तु उनके मन में ये संकल्प टिक न पाते। उन्हें तो बस अब एक ही धुन सवार थी कि यह नगरी कैसी भी हो, मां हमारे पास आयें ताकि हम यहां गृहस्थ-व्यवहार में रहते हुए कुछ दिन नित्य प्रति शिक्षा लेकर अपने जीवन को कर्म-योग की सुदृढ़ नींव पर खड़ा करने का अभ्यास करें। आबू में, यज्ञ की चार दीवारी में तो है ही पवित्र वातावरण परन्तु यहां माया नगरी में रहते हुए हमारी अवस्था योग-युक्त हो जाये, यही तो हमें प्राप्त करना है और उसके लिए यदि मां आ जायें तो सोने में सुगन्ध भर जायेगी।

आखिर वह दिन भी आ गया। नवम्बर 1956 में मां मधुबन अथवा ईश्वरीय तपोवन से कानपुर सेवाकेन्द्र पर पधारीं ताकि प्रभु से बिछुड़े हुए लाल उनकी मधुर, दिव्य गुणों से युक्त, वात्सल्यपूर्ण वाणी को सुनकर लाभान्वित हो सकें।

कानपुर में मातेश्वरी जी का स्वागत

ब्रह्माकुमारी विश्व मोहिनी जी ने लिखा है मातेश्वरी जी जब कानुपर पधारीं तो उनका दैवी रीति से भव्य स्वागत हुआ। वे जितने दिन वहां रहीं, प्रतिदिन प्रातः उनकी ज्ञान-वीणा सुनने के लिये नियम-पालन करने वाले बहुत-से बहन-भाई बहुत ही लगन से आते रहते। दिनभर नगर के विशिष्ट लोग उनसे अध्यात्म सम्बन्धी अपने प्रश्न हल कराते रहते थे। समाचार पत्रों के प्रतिनिधि भी उनसे भेंट-वार्ता करते और अपने-अपने समाचार पत्रों में मातेश्वरी जी की अनूठी वाणी के सार छापते थे। इनमें से 'डेली टेलिग्राफ', अंग्रेजी में दैनिक पत्र 'हिन्दुस्तान टाइम्स' (कानपुर संस्करण), 'दैनिक जागरण', 'स्वतन्त्र भारत', 'एडवान्स' तथा 'प्रदीप' इत्यादि के नाम विशेष तौर पर उल्लेखनीय हैं। इन समाचार पत्रों में बहुत मोटे शीर्षक के अन्तर्गत अनेक लेख, भेंट-वार्ता अथवा समाचार छपे थे। इनमें से कुछ शीर्षक ये थे – 'विश्व एवं व्यक्तिगत शान्ति', 'पृथ्वी पर स्वर्ग उतरने ही वाला है', 'जगदम्बा सरस्वती के प्रवचन', 'सुख-शान्ति की प्राप्ति का सहज उपाय' आदि-आदि। **क्रमशः**

प्रेरणापुंज

जीवन में नम्रता से सत्यता अपने आप सिद्ध हो जाती है

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

आज बाबा बोले मैं बच्चों को ज्यादा याद करता हूं। अगर बच्चे ज्यादा याद करें तो अहो सौभाग्य। हमको बाबा पदमापदम भाग्यशाली बनाने के लिए कितना याद करता है। हम कहते बाबा, आपको तो अनेक बच्चे हैं, हमको तो एक आप हो। हमें बाबा से साकार, अव्यक्त और निराकार तीनों ही इक्ट्ठी भासना मिलती है। अगर वह न आता तो इनकी गोद के बच्चे कैसे बनते, यह न होता तो उनको कैसे पहचानते। हमारे सामने एक में तीन हैं। तीनों की भासना जिस आत्मा के अन्दर भरी हुई है उसका आवाज निकलता है, बाबा आपको याद क्या करें, आप भासना ही दे रहे हो।

राजयोगिनी दादी जानकी, पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू

> बाबा का एक-एक बोल कितना गुह्य, गोपनीय और रहस्ययुक्त है। डीप जाओ तो पता चलेगा, गोपनीय है, स्नेह जोड़ने वाला है।

त्याग, तपस्या और सेवा में पहले क्या? तपस्या के पहले त्याग, त्याग के बिना तपस्या नहीं, तपस्या के बिना सेवा फीकी है। समझाने की हिम्मत तब आती है जब पूरी समझ हो, पूरा निश्चय हो। निश्चय से बहादुर बनते हैं तो हिम्मत काम करती है। निश्चय का बल है। बाबा का जो ज्ञान है, उसका रस अन्दर भरा हुआ हो। बाबा का एक-एक बोल कितना गुह्य, गोपनीय और रहस्ययुक्त है। डीप जाओ तो पता चलेगा, गोपनीय है, परमात्मा से स्नेह जोड़ने वाला है, उसमें बहुत रहस्य समाया हुआ है। एक-एक बोल ऐसे सुनते, मन को लगा तो मन्मनाभव हो गए। आनंद आ गया। मन्मनाभव के पहले देह सहित देह के सब संबंध त्याग। सर्व धर्मान परित्यज्य.... इस त्याग से तपस्या शुरू हो गई। दिल ने बाबा को अपना बना लिया। जैसे शादी होती है तो एक से जोड़ते, त्याग बहुतों से हो जाता। तो दिल से सबका त्याग। मामेकम्, देह सहित देह के सब संबंध त्याग।

बाबा ने कितनी समझ दी है। बाबा को समझदार बच्चे चाहिए। एक-एक बात प्यार से समझाओ। हमारे पास इतना खजाना है, उसका जितना मंथन करो, जितना औरों को समझाओ तो जैसे अथॉरिटी आ जाती। एक योग की, हम किसके बच्चे हैं, योग से पता चलता है। न सिर्फ बुद्धि से, बुद्धियोग से, बुद्धि से समझा यह बाप है, परन्तु उससे जो प्राप्ति, अनुभव की शक्ति है। वह अथॉरिटी वाला बना देती है। आज कईयों को आश्चर्य लगता यह कहां से बोलते हैं। बाबा कितनी अथॉरिटी से समझाता है।

कभी बाबा को संकोच नहीं होता है, यह महात्मा है, सन्यासी हैं। जानते हैं यह न होते तो दुनिया पाप में जलकर खत्म हो जाती। परन्तु अभी हमको समझ है। बुद्धि से समझाएंगे तो कहेंगे अभिमान है, योग से समझाएंगे तो कहेंगे राइट है। नम्रता से समझाया। नम्रता से सत्यता अपने आप सिद्ध हो जाती है। सुनने वाले की आंख खुल जाती है, फिर उनका दिल कहता है और सुनूं। कभी वाद-विवाद कोई नहीं कर सकता है। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा नजदीक खींचता है। हम लड़ना नहीं जानते हैं, किसी को क्रिटिसाइज नहीं करते हैं। **क्रमशः**

अव्यक्त इशारे

परमात्मा के समीप आने के लिए सच्ची भावना, सच्चा प्यार चाहिए

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

हम मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, यह स्मृति में लाओ तो स्मृति से समर्थी आती है। कर्म कान्सेस नहीं बनो, इमर्ज करो मैं कौन हूं, किसका बच्चा हूं, बाबा क्या है, मैं कौन हूं, इस स्मृति से साथ का भी अनुभव करेंगे, नशा भी अनुभव करेंगे और जो आपका संकल्प है उसमें सफलता आ जाएगी। अव्यक्त बापदादा की पालना कोई कम नहीं है। सूक्ष्म रूप से बाबा बहुत मदद करता है तो उसका फायदा उठाओ। फायदा उठाने आता है ना? बाबा ने जो स्मृतियां दी हैं, रोज बाबा टाइटल देता है उसे ही याद रखो तो नशा चढ़ेगा। जैसे बाबा कहता है आप मेरी आंखों के तारे हो, तारा आंखों में समाया होता है। तुम मेरे बच्चे कल्प-कल्प के सिकीलधे हो, कभी कहेगा विश्व के मालिक हो, कभी कहेगा दिव्यगुणधारी हो, कितने टाइटिल, कितने वरदान बाबा देता है। उसमें भी कितना बल होता है।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी (गुलजार दादी), पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

> बाबा कहते हैं- तुम मेरे बच्चे कल्प-कल्प के सिकीलधे हो, कभी कहेगा विश्व के मालिक हो, दिव्यगुणधारी हो, कितने टाइटिल देते हैं।

मुरली को अगर मन में रिवाइज़ नहीं किया तो याद नहीं रहेगा। हमारी आयु बड़ी है या बुद्धि बिज़ी रहती है। चलो तीन पेज़ भूल जाएं वरदान तो याद रख सकते हैं। वरदान भी मानो भूल गया, एक अक्षर तो याद रख सकते हैं- मेरा बाबा, बस। वह तो याद आ सकता है। बाबा याद आया तो वर्सा आएगा ही। बीज में झाड़ समाया हुआ है लेकिन दिल से कहो-मेरा बाबा, मुख से वर्णन करना उच्चारण करना वह अलग चीज़ है। तो इमर्ज करो, स्मृति में लाओ। समझो कोई विघ्न आता है, बाबा ने हमको कहा तुम मेरे निर्विघ्न बच्चे हो। बाबा ने मेरे को क्या बनाया। मैं निर्विघ्न आत्मा हूं। अगर यह स्मृति आई तो विघ्न को सामना करने की शक्ति आ जाएगी। इसलिए अपने अन्दर रिवाइज़ करो, स्मृति में लाओ, बस।

दिलाराम हमारी दिल लेने वाला दिलवर है, रहवर है। दिलवर है दिल की बात को अच्छी तरह से जानने वाला। रहवर है रास्ता दिखा रहा है। साथ ले चल रहा है। साथ और समीपता का अनुभव हो तो भी सतयुग में साथ आएंगे। समीप आना भी बड़ा भाग्य है। राज्य नहीं तो भाग्य तो है। राज्य करने वालों के समीप आने का भी भाग्य है। वहां भी तो साथी होंगे। समीप आने के लिए सच्ची भावना सच्चा प्यार चाहिए। विश्वास पक्का। कोई मेरा विश्वास ढीला कर नहीं सकता है, संशय आ नहीं सकता। साथ वाला अच्छी तरह से जानता है। अंग-संग साथ रहने वाला न जानें, बाहर वालों का दोष नहीं। जो समीप हैं, साथी हैं, वह जानते हैं। समीप आए कैसे? निमित्त कोई विशेषता से, कोई सेवा से समीप आ गए। बाबा ने पकड़ लिया।

बाबा पहले अंगुली पकड़ता, अंगुली से पहाड़ उठाया, अंगुली प्रीत वाली होगी तो सहयोग देगी। प्रीत के बिगर सहयोग की अंगुली भी नहीं दे सकते। अंगुली हाथ के बिगर तो कटकर नहीं आएगी। अंगुली आई माना बाबा ने हाथ ले लिया। फिर कहता तुम मेरी भुजा हो। हाथ भुजा के बिगर आ नहीं सकता। भगवान की भुजा बन गया तो फिर कहां जाएगा। **क्रमशः**

वैश्विक संस्कृति-प्रेम-शांति-सद्भावना अभियान का शुभारंभ

शिव आमंत्रण, श्रीनगर, उत्तराखंड। कला एवं संस्कृति प्रभाग द्वारा दादी मनोहर इंद्रा राजयोग भवन श्रीनगर उत्तराखंड में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर और उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। साथ ही नशामुक्त उत्तराखंड अभियान के नवनिर्मित प्रचार वाहन को हरी झंडी दी गयी। देश के विभिन्न हिस्सों से आए सुप्रसिद्ध गायकों एवं कलाकारों ने अपनी शानदार प्रस्तुतियां से बिखेरा अध्यात्म का जादू।

राज्य मंत्री श्याम वीर सैनी ने कहा कि भारत युवा देश है और युवा हर देश की ताकत होते हैं किंतु हमें इन्हें नशे की बुरी आदत से बचाना होगा, जिसमें ब्रह्माकुमारी संस्था का नशा मुक्ति उत्तराखंड अभियान बहुत ही कारगर साबित होगा।

अहमदाबाद से पधारीं कला एवं संस्कृति प्रभाग की चेयरपर्सन राजयोगिनी बीके चंद्रिका दीदी ने कहा कि भारतीय प्राचीन संस्कृति और सभ्यता प्रति दिव्य जागृति फैलाने के लिए देश के विभिन्न स्कूलों, कॉलेजों एवं संस्थानों के साथ ही कम्युनिटी में जाकर अभियान चलाया जाएगा। आत्म- चिंतन, आत्म-सम्मान और आत्म-प्रेम बढ़ाने से स्वतः ही दूसरों को हमसे शांति प्रेम और शक्ति की अनुभूति होती रहेगी। रुद्रप्रयाग विधायक भरत सिंह चौधरी ने कहा कि राजयोग ही वह मार्ग है जिससे हम सुख-दुख लाभ हानि में एक सम्मान रहना सीखता है। प्रभाग की नेशनल कोऑर्डिनेटर बीके प्रेम दीदी ने कहा कि यह अभियान वर्तमान में 14 राज्यों में चल रहा है, जिसका 2026 में राष्ट्रपति भवन में समापन समारोह रखा जाएगा। चंडीगढ़ से पहुंचे सोनालिका प्रिंट्स के मैनेजिंग डायरेक्टर बीके राधेश्याम गर्ग ने मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का शुभकामना संदेश पढ़कर सुनाया, जिसमें उनके द्वारा कहा गया कि उत्तराखंड में चल रही चारधाम यात्रा के दौरान शानदार अभियान के द्वारा अलख जगा कर चार चांद लग गए हैं। देवप्रयाग विधायक विनोद कंडारी ने आयोजन को समाज हित में प्रेरणादायक बताया। नेशनल कोऑर्डिनेटर बीके पूनम दीदी, क्षेत्रीय निदेशक बीके मेहरचंद भाई, राष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रम के अध्यक्ष पंडित हेमंत गुरु महाराज, बीके नीलम दीदी, बीके सरिता दीदी, बीके ऊषा दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

भागलपुर में प्रशासक अभियान के तहत कार्यक्रम आयोजित

शिव आमंत्रण, भागलपुर, बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ के भागलपुर सेवाकेंद्र पर प्रशासक अभियान के पहुंचने पर प्रशासक सेवा प्रभाग के तहत कर्मयोग एवं सुशासन के लिए मेडिटेशन विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें प्रभाग के मुख्यालय संयोजक राजयोगी बीके हरीश भाई, दिल्ली से बीके सोनालिका, डीपीएम सुनीरमल गैरेन ने अपने विचार व्यक्त किए।

कर्मयोग एवं सुशासन के लिए मेडिटेशन विषय पर ओआरसी गुरुग्राम की बीके शिफाली बहन ने कहा कि योग माना जुड़ाव, संबंध। कर्मयोग का अर्थ है कर्म से जुड़ाव। कर्म में स्ट्रेस होने का कारण है फल की प्राप्ति। परंतु कर्म करते हुए निष्काम भाव रखने से स्ट्रेस नहीं हो सकता है। हमेशा यह स्मरण रखें कि कर्म करते जाएं और जो भी प्राप्त हो जाए उसमें संतुष्ट रहना है। यही कर्म योग एवं सुशासन है। खुद अपने विचार पर नियंत्रण करना है। संचालिका बीके अनीता दीदी के निर्देशन में अनेक कार्यक्रम किए गए।

अररिया। सेवाकेंद्र संचालिका बीके उर्मिला दीदी के निर्देशन में पुलिस लाइन में प्रशासक सेवा प्रभाग के तहत पुलिस अधिकारियों और जवानों के लिए मोटिवेशनल कार्यक्रम आयोजित किया गया।

विघ्न विनाशक तपस्या शिविर में एक हजार ब्रह्मावत्स हुए शामिल

हर संकल्प में एक क्रिएटिव एनर्जी होती है: बीके गीता दीदी

शिव आमंत्रण, नीमच, मप्र। संयुक्त परिवार का विघटन रोकने के लिए एक-दूसरे के विचारों को सम्मान दें, कम से कम सांध्यकालीन भोजन एक साथ बैठकर ही करना चाहिए, इससे घर का माहौल सदैव हल्का रहता है।

उपरोक्त विचार सुप्रसिद्ध प्रेरक वक्ता राजयोगिनी बीके गीता दीदी ने सुख शांति की ओर कदम.. कार्यक्रम को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। सद्भावना सभागार में बड़ी संख्या में जिले के प्रमुख उच्चाधिकारी, राजनेता एवं प्रतिष्ठितजन उपस्थित रहे। बीके गीता दीदी ने सभी के सम्मुख संकल्प की शक्ति का महत्व बताते हुए कहा कि हर संकल्प में एक क्रिएटिव एनर्जी होती है जिसे हमें सकारात्मक रूप से प्रयोग में लाना है। जो हम अपनी सोच में निरन्तरता लाते हैं, वही हमारा स्वरूप बन जाता है, इसलिए हमेशा व्यर्थ और नकारात्मक संकल्पों से बचकर सकारात्मक और शक्तिशाली संकल्पों के लिए नियमित रूप से मेडिटेशन का अभ्यास अवश्य करें। यह आध्यात्मिक प्रयास मन को सही दिशा की और ले जाएगा।

शुभारंभ प्रेरक वक्ता राजयोगी बीके सूर्य भाई, बीके सविता दीदी, फैमिली कोर्ट के विशेष न्यायाधीश कुलदीप जैन, मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी रविकुमार बोरासी, विधायक दिलीप सिंह परिहार, नगर पालिका अध्यक्ष स्वाति चौपड़ा, भाजपा जिलाध्यक्ष वन्दना खण्डेलवाल, ज्ञानोदय विश्व विद्यालय की कुलाधिपति डॉ. माधुरी चौरसिया, डिप्टी कमांडेंट तरंग बंसल, वरिष्ठ भाजपा नेता संतोष चौपड़ा तथा डॉ. अशोक जैन, बीके सुरेंद्र भाई आदि ने दीप प्रज्वलित कर किया।

प्रमुख वक्ता बीके सूर्य भाई ने कहा कि कि हमारे छोटे छोटे संकल्प हमारे जीवन पर बड़ा बड़ा प्रभाव डालते हैं। संचालन बीके श्रुति दीदी ने किया। स्वागत भाषण बीके सविता दीदी ने दिया। इसके पूर्व दशहरा मैदान स्थित टॉउन हॉल में जिलेभर से आए से आए एक हजार से अधिक ब्रह्मावत्सों ने पांच घण्टे से अधिक अखण्ड मौन तपस्या की।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, दिल्ली। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने सिविल लाइंस स्थित अपने नए आवास का निरीक्षण किया। इस दौरान उनके साथ परिवार के अन्य सभी सदस्य उपस्थित थे। इस मौके पर बीके मीरा बहन, बीके ममता बहन, बीके सोनिया बहन और बीके अंबिका बहन ने स्वागत किया।

शिव आमंत्रण,बड़ोदरा, गुजरात। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन और लायंस क्लब इंटरनेशनल द्वारा डॉक्टर्स डे दिवस पर अलकापुरा सेवाकेंद्र की निदेशिका डॉ. बीके निरंजना दीदी को मोस्ट एमीनेंट डॉक्टर अवार्ड-2025 से नवाजा गया। इस दौरान आईएमए के अध्यक्ष डॉ. मितेश शाह, इंटरनेशनल लायंस क्लब के डायरेक्टर रमेश प्रजापति सहित बड़ी संख्या में क्लब के सदस्य मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, वाराणसी, उप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के गौतम नगर कॉलोनी सुसुवाही, चितईपुर सेवाकेंद्र द्वारा चिकित्सकों का सम्मान समारहो आयोजित किया गया। इसमें मुख्य अतिथि बीएचयू के प्रोफेसर विश्वंभरनाथ मिश्र, महंत श्रीसंकट मोचन हनुमान मंदिर वाराणसी रहे। श्रीरामनगर एवं चितईपुर प्रभारी बीके सरोज दीदी ने सभी को राजयोग मेडिटेशन का महत्व बताया।

शिव आमंत्रण, भरतपुर, राजस्थान। अंतर्राष्ट्रीय विश्व ओलंपिक दिवस पर जिला ओलंपिक संघ के सचिव डॉ. रमेश इंदौलिया, जूडो संघ के जिला सचिव ओमकार पंचोली ने सेवाकेंद्र संचालिका बीके कविता दीदी को मोमेंटो एवं शाल पहनाकर सम्मानित किया। बीके प्रवीणा बहिन, बीके रजनी बहिन, बीके जयसिंह भाई एवं मल्लखम एकेडमी के विद्यार्थी मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, पन्ना, मप्र। विश्व तंबाकू निषेध दिवस के उपलक्ष्य में नगर में जागरूकता रैली निकाली गई। रैली को पूर्व कैबिनेट मंत्री एवं पन्ना विधायक बृजेंद्र प्रताप सिंह एवं पन्ना प्रभारी सीता बहन ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान लोगों को नशे से दूर रहने का संदेश दिया गया।

बैतूल में डिवाइन यूथ फोरम रिट्रीट का आयोजन

शिव आमंत्रण, बैतूल, मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ की सहयोगी संस्था राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन के युवा प्रभाग द्वारा नई उमंग नई तरंग सेवा योजना के अंतर्गत डिवाइन यूथ फोरम रिट्रीट का आयोजन किया गया। तीन दिन तक चले इस रिट्रीट का निर्देशन अहमदाबाद से पधारीं प्रभाग की राष्ट्रीय समन्वयक बीके कृति बहन ने किया। उन्होंने फुल स्टॉक एवं फुल स्टॉप विषय को लेकर मध्यप्रदेश के विभिन्न स्थानों से पधारीं ब्रह्माकुमारी बहनों को आध्यात्मिक रूप से सशक्त करने वर्कशॉप और क्लासेज का आयोजन किया। उदघाटन पर डॉ. जयदीप पोपली, आरके मेमोरियल हॉस्पिटल की डायरेक्टर डॉ. कृष्णा मौसिक एवं सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की डिप्टी डायरेक्टर रोशनी वर्मा ने किया।

प्रभाग की भोपाल की संयोजिका बीके रेखा दीदी ने कहा कि यह प्रोजेक्ट युवाओं में सकारात्मक क्रांतिकारी परिवर्तन लाने में सहायक हुआ है। भाग्य विधाता भवन की संचालिका ब्रह्माकुमारी मंजू दीदी ने बताया कि रिट्रीट में विभिन्न विषयों पर वर्कशॉप, ग्रुप डिस्कशन व एक्टिविटीज के आधार से युवाओं को प्रोत्साहित करने तथा युवा शक्ति के सही दिशा में क्रियान्वयन के तरीके सिखाए गए। पुणे से पधारीं शीतल बहन ने क्रिएटिव मेडिटेशन द्वारा जीवन में दिव्य गुणों को धारण करने के तरीके सिखाए। इसमें पूरे प्रदेश से सौ से अधिक युवा भाई-बहनों ने भाग लिया।

राज्य स्तरीय प्रशासक अभियान का मुजफ्फरपुर से शुभारंभ

शिव आमंत्रम, मुजफ्फरपुर (बिहार)। बिहार राज्य के प्रशासकों, कार्यपालकों एवं प्रबन्धकों के लिए प्रशासक सेवा प्रभाग द्वारा चलाए जा रहे अभियान का शुभारंभ मुजफ्फरपुर की निदेशिका बीके रानी दीदी, प्रभाग के मुख्यालय संयोजक बीके हरीश भाई ने हरी झंडी दिखाकर किया। इस अभियान के तहत पूरे बिहार राज्य में जिला प्रशासन के विभिन्न कार्यालय, नगर निगम व नगर पालिका कार्यालय, बैंक, निजी और सरकारी संस्थानों में बेहतर प्रबंधन को लेकर कार्यशालाओं का आयोजन किया जाएगा।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, शिमला, हिमाचल प्रदेश। राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल से शिमला पंथाघाटी सेवाकेंद्र की बीके सुनीता दीदी और पानीपत के भारत भूषण भाई और अन्य बहनों ने मुलाकात की। साथ ही साइंटिस्ट एवं इंजीनियरिंग विंग के प्रोग्राम में माउंट आबू आने का निमंत्रण दिया। इसके अलावा हाईकोर्ट शिमला में लगभग 300 वकीलों को बीके भारत भूषण ने जॉय एट वर्क प्लेस, वर्क विदआउट वरी और हाउ टू लीड टेंसन फ्री लाइफ विषयों पर संबोधित किया।

शिव आमंत्रण, विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा कामकाजी व्यक्तियों के लिए उनके कार्यस्थलों पर उपयोग डिजाइन किए गए माइंड स्पा प्रोजेक्ट का शुभारंभ किया गया। इस प्रदर्शन एसएस कन्वेंशन सेंटर में आयोजित प्लास्टिक प्रिंटिंग पैकेजिंग एक्सपो 2025 के दौरान किया जाएगा। इस प्रोजेक्ट का उद्घाटन एनटीआर जिले की कलेक्टर डॉ. जी. लक्ष्मीशा द्वारा किया जाएगा। इस मौके पर अमरावती बोटिंग क्लब के सीईओ तरुण काकानी गारू, टीटी देवस्थानम बोर्ड के सदस्य जे. कृष्णा मूर्ति, एपी चैंबर्स एफिलिएट्स के अध्यक्ष पोटलुरी भास्कर राव, एनएपीपीएमए के अध्यक्ष जी. जया कुमार विशेष रूप से मौजूद रहे।

योग हमारे जीवन में जीवंतता का प्रतीक है: बीके शैलजा दीदी

शिव आमंत्रण, छतरपुर, मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के किशोर सागर सेवाकेंद्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य के लिए योग की थीम पर संस्कार वाटिका में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें छतरपुर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शैलजा दीदी ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस हमारे लिए गर्व करने वाला दिवस है क्योंकि हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सलाह को मानते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस दिवस को योग दिवस के रूप में घोषित किया है। इसके द्वारा हमारी भारतीय संस्कृति की जो श्रेष्ठता, विशेषता, विशालता है वह विश्व पटल पर सम्मानित हुई है। योग हमारे जीवन में जीवंतता का प्रतीक है, योग हमें जीवन जीने की कला सिखाता है, योग हमारे जीवन को ऊर्जा से भर देता है, योग से हमारे मन को शांति मिलती है। राजयोग हमारे आधुनिक जीवन के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य का अभिन्न अंग है जो हमें जीवन के वास्तविक अर्थ तथा उद्देश्य को समझने तथा इसकी चुनौतियों का सामना करने में सहायता करता है। कार्यक्रम में प्रातः 5:30 बजे सभी

का आगमन हुआ और शुरुआत ईश्वरीय महावाक्य एवं प्रभु स्मृति से की गई, जिसमें ब्रह्माकुमारी बहनों ने विश्व शांति एवं सर्व के स्वास्थ्य हेतु संगठित मेडिटेशन किया तत्पश्चात दीप प्रज्वलन किया गया। म्यूजिकल एक्सरसाइज के बाद योगा टीचर प्रियंका चौरसिया ने सरकार के प्रोटोकॉल सीवाईपी पर आधारित योगा का अभ्यास कराया। कार्यक्रम में चौरसिया समाज अध्यक्ष बृजेश चौरसिया, समाजसेवी प्रकाश चंद्र जैन, एस के उपाध्याय, एडवोकेट संजय मिश्रा सहित नगर के गणमान्य नागरिक एवं ब्रह्माकुमारीज के भाई-बहनें सम्मिलित हुए।

शिव आमंत्रण, इंदौर, मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के जोनल मुख्यालय न्यू पलासिया ओम शांति भवन द्वारा एयरपोर्ट पर स्थित सीआईएसएफ कार्यालय में जवानों के लिए नशा व तनाव मुक्त कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें वरिष्ठ राजयोगी बीके नारायण भाई ने कहा कि आज के मानव को स्वयं की पहचान नहीं होने के कारण अनेक मानसिक, शारीरिक विकृतियां जन्म लेती जा रही है। इस अवसर पर डॉ महेंद्र सिंह होरा ने भी संबोधित किया। बीके प्रमिला बहन ने नशामुक्त भारत अभियान के बारे में बताते हुए कहा कि कोई भी नशा हो शारीरिक और मानसिक क्षति पहुंचाता है।

अहमदाबाद में मीडिया सम्मेलन आयोजित

शिव आमंत्रण, अहमदाबाद। ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व क्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी सरला दीदी के 6वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में अहमदाबाद के सुख शांति भवन क्षेत्रीय कार्यालय में 'डिजिटल युग में मूल्य आधारित पत्रकारिता के लिए चुनौतियां एवं समाधान' विषय पर मीडिया सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें बड़ी संख्या में पत्रकारों ने भाग लिया। इस दौरान विमान दुर्घटना में मारे गए लोगों की आत्मा की शांति के लिए श्रद्धांजली अर्पित की गई।

सम्मेलन में राजयोगिनी बीके नेहा दीदी, जलगांव से आए प्रो. डॉ. सोमनाथ बड़नेरे, केतनभाई त्रिवेदी, आलमदार बुखारी, डॉ. जयेश पारकर, मनोहर वरियानी, योगेश पंड्या, ज्ञानेंद्र विश्वकर्मा, शंकरलाल प्रजापति, चिराग शाह, मीडिया प्रभाग की डॉ. बीके नंदिनी बहन ने दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया गया। प्रो. डॉ. बड़नेरे ने कहा कि आज समाज में सकारात्मक बदलाव आ रहा है, डिजिटल मीडिया की चुनौतियों के बावजूद इसका समाधान व्यक्ति पर आधारित है। इस समय अपने मूल्यों से समाज को सही दिशा देकर चुनौतियों का समाधान करना वर्तमान समय की बड़ी मांग है।

झाँसी, उप्र। डायमंड सीमेंट प्लांट में खुशहाल जीवन एवं नशा मुक्ति विषय पर सेमिनार आयोजित किया गया। इसमें मुख्य अतिथि प्लांट के निदेशक व अमीषा रावत रहे। विशेष इस दौरान ब्रह्माकुमारीज़ की निदेशिका बीके प्रतिभा दीदी ने बताया कि आध्यात्मिक सशक्तिकरण से व्यक्ति मानसिक रूप से मजबूत बनता है तथा नशे जैसी बुराइयों से मुक्त होकर जीवन को सुखमय बना सकता है। नशा मुक्ति पर एक भावनात्मक नाटक का मंचन भी किया गया, जिसे सभी ने सराहा।

शिव आमंत्रण, सदस्यता हेतु संपर्क करें-

वार्षिक मूल्य ▶ 150 रुपए ▶ तीन वर्ष 450 रुपए
▶ आजीवन 3500 रुपए
मो ▶ 9414172596, 8521095678
Website ▶ www.shivamantran.com

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ▶ ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो ▶ 8538970910, 9179018078
Email ▶ shivamantran@bkivv.org

For online transfer

A/C Name: Rajyoga Education & Research Foundation
A/C Number: 35401958118, IFSC Code: SBIN0010638
Bank & Branch: State Bank Of India, PBKIVV, Shantivan, Abu Road, Rajasthan
Note: On transfer please email details to: shivamantran.acct@bkivv.org, Helpline: 9471854331

Scan To Pay

प्रथम मुख्य प्रशासिका मम्मा का 60वां पुण्य स्मृति दिवस देशभर में आध्यात्मिक ज्ञान दिवस के रूप में मनाया गया

शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती (मम्मा) का पुण्य स्मृति दिवस संस्थान के देश-विदेश के सेवाकेंद्रों पर आध्यात्मिक ज्ञान दिवस के रूप में मनाया गया।

मुख्यालय शांतिवन में आयोजित श्रद्धांजली कार्यक्रम में अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी ने कहा कि मम्मा बहुत आज्ञाकारी, ईमानदार, वफादार और फेथफुल थीं। वह हर बात में निश्चय बुद्धि थीं। उन्हें शिव बाबा पर पूर्ण निश्चय था। वह कभी किसी में अवगुण नहीं देखती थीं, सदा सभी में गुण ही देखती थीं। सदा सभी को आगे बढ़ाया। वह सदा कहती थीं कि जो कर्म मैं करुंगी, मुझे देखकर और करेंगे। इसलिए आप सभी के कर्म ऐसे दिव्य, श्रेष्ठ और महान हों कि आपको

देखकर दूसरे भी उस राह पर चलने के लिए प्रेरित हो सकें। बता दें कि 24 जून 1965 को अपने नश्वर देह का त्याग करके संपूर्णता को प्राप्त किया था।

अतिरिक्त महासचिव व मीडिया निदेशक बीके करुणा ने कहा कि जब पहली बार माउंट आबू में मम्मा को देखा और मिला तो उनके योगमय जीवन से बहुत प्रभावित हुआ। तब मैं 20 साल का था। उनका जादुई व्यक्तित्व अद्भुत था। मम्मा ने मुझसे कहा था कि यह बाबा का कल्प वाला बच्चा है। मम्मा को हर किसी की फ्रिक रहती थी। जैसे एक मां को अपने बच्चों की फ्रिक रहती है, वैसे ही मम्मा भी हर एक भाई-बहनों का ध्यान रखती थीं। रोज रात को वह सबकी क्लास लेती थीं और जिससे गलती होती थी तो उसे प्यार से समझाती थीं। समापन पर मम्मा की याद में भोग लगाया गया। इस मौके पर बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

100 संस्थाओं के 500 लोगों का किया सम्मान

हिसार, हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ के बालसमंद रोड स्थित पीस पैलेस में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इसमें स्वच्छता, स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली 100 संस्थाओं की 500 से अधिक महान विभूतियों को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में मंत्री रणबीर गंगवा, विधायक रणधीर पनिहार, समाजसेवी राजेंद्र गावडिया, मेयर प्रवीण पोपली उपस्थित रहे। वक्ता के रूप में बीके ईवी गिरीश भाई, समाज सेवा प्रभाग के मुख्यालय संयोजक बीके बीरेन्द्र भाई, केंद्र संचालिका बीके रमेश कुमारी दीदी, बीके महेश ने संबोधित किया। बीके अनीता दीदी, बीके सावित्री दीदी सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

शीला दीदी का सीएम ने किया सम्मान

शिव आमंत्रण, शिमला (मंडी), हिमाचल प्रदेश। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा मंडी जिले में चलाए जा रहे नशामुक्त भारत अभियान के अंतर्गत की गई उल्लेखनीय सेवाओं पर मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुखू ने सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा सचिवालय में आयोजित समारोह में सेवाकेंद्र संचालिका बीके शीला दीदी को सम्मानित किया।

असम के मुख्यमंत्री से की मुलाकात

शिव आमंत्रण, डिब्रूगढ़, असम। सीएम सचिवालय में बीके बिनीता दीदी के नेतृत्व में ब्रह्माकुमारीज़ के प्रतिनिधिमंडल में शामिल बीके बिधान भाई और बीके भानु दीदी ने मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा से मुलाकात की। साथ ही उन्हें ईश्वरीय पुस्तकें और स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मान किया। साथ ही संस्थान द्वारा की जा रहीं सामाजिक सेवाओं के बारे में मुख्यमंत्री सरमा को बताया। उन्हें माउंट आबू से जुड़े अपने अनुभव भी सांझा किए।

कुलपति का किया सम्मान

शिव आमंत्रण, सम्बलपुर, ओडिशा। राज्य मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.श्याम सुंदर पट्टनायक, प्रो. बिधु भूषण मिश्र (कुलपति, सम्बलपुर विश्वविद्यालय), प्रो. दीपक कुमार साहू (कुलपति, वीर सुरेन्द्र साई प्रद्योगिकी विश्वविद्यालय), प्रो. सुशांत कुमार दास (कुलपति, गंगाधर मेहेर विश्वविद्यालय) के ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र आगमन पर निदेशिका बीके पार्वती दीदी व बीके ज्योति दीदी ने स्मृति चिंह्न प्रदान कर सम्मान किया।

विहासा प्रशिक्षण का आयोजन

शिव आमंत्रण, दादर, मुंबई। ब्रह्माकुमारी सेवा केंद्र पर नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत विहासा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें मुंबई टीम के प्रशिक्षकों के लिए कॉपरेशन माड्यूल पर प्रशिक्षण दिया गया। संचालन बीके डॉ. अशोक मेहता, बीके डॉ. प्रियंका पाटिल एवं बीके डॉ. सचिन परब द्वारा किया गया। सत्र में जीवन में सहयोग की भावना को विकसित करने के उपायों पर चर्चा की गई। आयोजन में डॉक्टर्स व मेडिकल स्टाफ ने भाग लिया।

नई राहें

बीके पुष्पेंद्र, संयुक्त संपादक
शिव आमंत्रण, शांतिवन

आध्यात्मिक जीवन का मूल आधार हैं 'सिद्धांत'

सिद्धांत आध्यात्मिक जीवन की वह प्राणवायु और आधार हैं, जिसके बिना जीवन निरर्थक और दिशाहीन है। सिद्धांत, नियम और मर्यादाओं से युक्त जीवन ही अनेकों के लिए प्रेरक व मार्गदर्शक बनता है। अध्यात्म की राह में सच्चाई-सफाई-सादगी आधार हैं, तो संपूर्ण पवित्रता लक्ष्य। कालखंड में समय प्रति समय अनेक देवात्माएं, महात्माओं ने अपने ज्ञान, अनुभव और ईश्वरीय प्रेरणा के आधार पर कुछ सिद्धांत प्रतिपादित किए, जो उनकी पहचान बन गए। जिस समुदाय ने उन सिद्धांतों को जीवन का आधार बनाया वह उनके अनुयायी और उपासक बनते गए। महावीर स्वामी ने अहिंसा परमोधर्मः का सिद्धांत दिया जो जैन धर्म का सूत्र वाक्य और आधार बन गया। महात्मा बुद्ध ने दुनिया को करुणा, अहिंसा का मार्ग दिखाया और वह दया, करुणा, संयम और विवेकशील जीवन के प्रतीक बन गए। आचार्य चाणक्य ने न्याय और राजनीति में नैतिकता की ऐसी परिभाषा गढ़ी जो आज भी नजीर के दौर पर दी जाती है। संत कबीर दास ने सच्चाई, सामाजिक समानता और ईश्वर की भक्ति के नए सिद्धांत प्रतिपादित किए। उन्होंने समाज में फैले अंधविश्वास, पांखड और ऊंच-नीच को नकारा। उनके दोहे आज भी आत्मा को झकझोर देते हैं। राजा हरिश्चंद्र ने अपने जीवन में सत्यनिष्ठा के सिद्धांत को इस गहराई से आत्मसात किया कि सत्य के मार्ग पर चलते हुए उन्होंने अपना राज्य, परिवार और जीवन तक त्याग दिया लेकिन कभी झूठ नहीं बोला। उनके जीवन का आदर्श था कि सत्य के लिए सबकुछ दांव पर लगा सकता हूं लेकिन सत्य को नहीं छोड़ सकता।

स्वामी विवेकानंद ने आत्मबल, सेवा और राष्ट्रप्रेम की ऐसी गूंज बिखेरी जो आज भी युवाओं को नई ऊर्जा से सराबोर कर देती है। उन्होंने नारा दिया उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए। उन्होंने धर्म को कर्म से जोड़कर कर्मयोगी जीवन का मार्ग बताया। कहने का भाव यही है दुनिया में जो महान आत्माएं अपनी सोच और कर्म से आदर्शों के जो निशान छोड़ गए हैं, उनमें सबसे महत्वपूर्ण बात रही कि जीवन में कभी भी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। अनेक विरोध, उपहास, निरादर और विपरीत परिस्थितियों के बावजूद चट्टान की तरह अपने नियम, मर्यादाओं पर सदा अचल-अडोल और स्थिर रहे।

जैसा कर्म मैं करुंगी मुझे देखकर और करेंगे-

ब्रह्माकुमारीज़ के इतिहास में जो महान आत्माएं हुईं उनके जीवन में भी कुछ मूलभूत सिद्धांत शामिल रहे। उन्हीं सिद्धांतों की बदौलत आज भी ब्रह्मावत्स उन्हें याद करते हैं और उन पर चलने के लिए प्रयासरत रहते हैं। ब्रह्मा बाबा ने परमात्मा की प्रेरणा से नारी को समाज में फिर सम्मान, इज्जत और गौरव दिलाने का आंदोलन ऐसे समय में शुरू किया जब नारी को अबला समझा जाता था। उन्होंने नारी शक्ति को उनमें छिपे दिव्य गुणों और शक्तियों को जगाया जो आज पूरे विश्व में अध्यात्म की पताका फहरा रही हैं। बाबा के अंतिम शब्द थे- निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी भवः। प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती के जीवन का मुख्य सिद्धांत था- जैसा कर्म मैं करुंगी मुझे देखकर और करेंगे। यही कारण रहा कि वह ज्ञान की सर्वश्रेष्ठ धारणा और पवित्रता की प्रतिमूर्ति बन गईं। राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी के जीवन के सिद्धांत रहें- निमित्त भाव, निर्मल भाव और निर्मल वाणी। पवित्रता और सादगी ही जीवन का सच्चा शृंगार हैं। राजयोगिनी दादी जानकी सदा सबको याद दिलाती थीं- मैं कौन? मेरा कौन? मुझे क्या करना है? सच्ची दिल, साफ दिल, बड़ी दिल तो सदा सफलता हमारे साथ रहेगी। राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी ने नारा दिया- सादगी जीवन का सर्वश्रेष्ठ शृंगार है। संजय की उपाधि से विभूषित राजयोगी जगदीश भाई ने इस ईश्वरीय यज्ञ में पूर्ण समर्पण और आज्ञा पालन के आदर्श स्थापित किए।

हमारे जीवन के क्या सिद्धांत हैं?

अब सवाल उठता है कि यदि हम भी अध्यात्म की राह के पथिक हैं, अनुगामी और साधक हैं तो क्या हमारे जीवन में भी कुछ मूलभूत सिद्धांत, नियम और मर्यादाएं हैं? क्या हमारे कर्म, सोच और व्यवहार आदर्श प्रस्तुत करने योग्य हैं? क्या सच्चाई-सफाई-सादगी को जीवन का आधार बनाया है? क्या ईश्वरीय नियम, मर्यादाओं की विरासत को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दिया है? क्या सत्यता, सभ्यता, दयालुता, ईमानदारी, नैतिकता को जीवन की पूंजी बनाया है? क्या हम व्यावहारिकता के मूलभूत सिद्धांतों पर खरे उतरते हैं?

एक सिद्धांत ऐसा हो जो पहचान बन जाए-

हर मनुष्य में एक दिव्य गुण ऐसा होता है जो उसकी पहचान का आधार होता है। परमात्म शक्ति, मदद और साथ से उस दिव्य गुण को निखारा जा सकता है। उसमें बल भरकर प्रेरक जीवन बनाया जा सकता है। ब्रह्माकुमारीज़ में ऐसीं अनेक महान विभूतियां हैं जिन्होंने उच्च शिक्षित नहीं होने के बावजूद राजयोगी जीवनशैली से खुद को इतना सशक्त और मजबूत बनाया है कि आज वह अनेकों के लिए आदर्श और प्रेरक हैं। यह तभी संभव हो सका जब उन्होंने ईश्वरीय सिद्धांतों पर चलते हुए उन्हें अक्षरशः पालन और शिरोधार्य किया। सिद्धांत ही हमारी जीवन की सबसे बड़ी पूंजी और विरासत हैं। इनकी संभाल करना हमारी पहली प्राथमिकता होना चाहिए। परमात्म शिक्षा और ज्ञान को जीवन में अपनाने के बाद जीवन को पूर्णता मिल जाती है।

बीके शिवानी दीदी, अंतरराष्ट्रीय प्रेरक वक्ता

स्वयं को देखें... मैं आत्मा सतयुग बना रही हूं

अगर हम पुराने तरीके से सोचते रहें, बोलते रहें, करते रहें तो खुशी, सेहत और सुंदर रिश्ते संभव नहीं हैं

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

आने वाले समय में दुःख और बढ़ने वाला है। लोग झूठ बोलते हैं, गलतियां करते हैं, धोखा देते हैं, कहना नहीं मानते, वो कलियुग है। उसके बीच रहते हुए मैं आत्मा सतयुग बना रही हूं। देखें अपने आपको मैं आत्मा सतयुग बना रही हूं। मैं आत्मा अपनी बैटरी को चार्ज कर रही हूं। खुद से पूछे मैं आत्मा कैसी हूं? मेरी हर सोच, मेरा बात करने का तरीका, मेरा व्यवहार कैसा है? कुछ ऐसे लोगों को अपनी आंखों के सामने लेकर आएं जो हमारे अनुसार नहीं हैं। जिनके व्यवहार के संग में आकर हम भी कलियुग वाले हो जाते हैं। वो तो कलियुग में हैं कलियुग वाला व्यवहार करेंगे ही हमारे सामने। जो उनके लिए सही वो सही है। अब देखें अपने आपको- मैं आत्मा सतयुग में हूं। मेरा युग और उनका युग ही अलग है। मेरे संस्कार और उनके संस्कार ही अलग हैं।

हमें सतयुग बनाना है। अगर हमें सतयुग बनाना है तो कलियुग के लोगों से बिल्कुल डिफरेंट होना पड़ेगा। जब आपके आस-पास के लोग फोटो खींच रहें हो तो उस क्षण हम क्या करेंगे? मोबाइल जेब में रहने देंगे। लेकिन ये भी याल करना है कि हमें सतयुग बनाना है। एक तो हमें कलियुग की फोटो की जरूरत नहीं है। दूसरी उस दृश्य को हम इस तरह देख रहें हैं कि वह दृश्य सतयुग वाला हो जाए। फिर वो लोग उस दृश्य का फोटो खींचते रहें। हम उस सतयुगी दृश्य को बनाएंगे। वो लोग उस दृश्य का फोटो खींचकर खुशी मनाएंगे। अब हमारा तो रोल चैंज हो गया। अगर हमें सतयुग बनाना है तो दो बातें हैं- एक है सतयुग में जाना और दूसरा है सतयुग हमें बनाना है। दोनों बातों में बहुत फर्क है।

कलियुग में सतयुगी बनकर रहना ही राजयोग

जब हम पीसफुल, निःस्वार्थ, प्रेममयी, शुद्ध आत्मा, स्वभाव संस्कार से बिल्कुल स्टेबल होंगे तो सतयुग महसूस होगा। अगर सामने वाला कलियुग में है तो कलियुग में गुस्सा करना, झूठ बोलना, धोखा देना एलाउ है। लेकिन सतयुग में गुस्सा करना नॉट एलाउड है। सतयुग में बुरा महसूस करना, रोना, उल्टा जवाब देना नॉट एलाउड है। अब ये कलियुग और सतयुग इक्कट्ठे रह पाएंगे? सतयुगी संस्कार लेकर सतयुग में रहना ये तो कोई भी कर सकता है। हमारे साथ सब प्यार से बात करें तब हम भी प्यार से बात करें, तो उसमें क्या ताकत चाहिए? वो तो कोई भी कर सकता है। सतयुग में सतयुगी जैसा रहना सबसे आसान है। कलियुग में कलयुगी जैसे रहना बहुत आसान है। कोई भी कर सकता है। लेकिन कलियुग में सतयुगी होकर रहना वो राजयोग मेडिटेशन है।

मान लिया कि आपके आसपास लोग गलत प्रकार का भोजन खा रहें हैं। कोई जंक खा रहा, कोई सड़क पर बैठ कर पानी पुरी खा रहा है, कोई फ्राइड खा रहा, कोई सड़क पर बैठ

> एक से ही होती है नव संस्कारों की उत्पत्ति

कर नॉनवेज खा रहा है। आपको पता लग गया ये सब गलत भोजन है लेकिन 25-30 साल पहले आप भी वही खाना खा रहे थे। अब एक दिन जागृति आई कि मुझे ये सब भोजन नहीं चाहिए। क्योंकि मेरा शारीरिक-मानसिक रिजल्ट ठीक नहीं रहा तो मुझे आज से हेल्थ चाहिए। तो हमने निर्णय ले लिया मुझे नहीं खाना। तो आसपास के लोग थोड़ी ही खाना बंद कर देंगे? क्योंकि उन्होंने निर्णय नहीं लिया है। निर्णय किसने लिया है? हमने लिया है। जिस दिन हमने निर्णय लिया आसपास के लोग कुछ और खा रहें हों और मुझे कुछ और खाना है ये संभव है। हां ये आसान है ऐसा संकल्प ले लेंगे तो हो जाएगा। ये बिल्कुल सहज है। ऐसे समय पर हम आसपास के लोगों से ज्यादा उमीदें नहीं करने हैं। लोग तो हमें वही खिलाने की कोशिश करेंगे जो वो खा रहे हैं। जब कई बार हम नहीं खाएंगे तो वो हमारा मजाक भी उड़ाएंगे, चिढ़ाएंगे भी खा लो-खा लो थोड़ा सा। लेकिन जिसने निर्णय ले लिया वो आत्मा क्या करेगी? अगर हमारे पास वो पावर है ये निर्णय लेने की तो मुझे कोई प्रलोभित नहीं कर सकता। भले मेरे आसपास चारों तरफ लोग अनहेल्दी खाना खा रहे हों, पी रहा हो। अगर कोई कुछ भी खा पी रहा है और हम नहीं खाएंगे ये तो कर सकते हैं ना। कोई कुछ भी बोल रहा है और हम वैसा नहीं बोलेंगे। अगर ऐसा नहीं कर सकते तो क्यों नहीं कर सकते?

सिर्फ हमें अपने आप से पूछकर ये निर्णय लेना है। अगर निर्णय लेते हुए गलती से हमने अपने मन को कह दिया इतना सारा पढ़ने के बाद भी ये करना तो आसान नहीं है। तो मन क्या करेगा? फिर मन ये कहेगा आश्रम में बैठकर ये सब बातें करना बहुत आसान होता है। इतना समझने के बाद भी ये सब होने वाली नहीं हैं। फिर मन ये कहेगा ये सब बात इन बहनों को क्या पता? इन्होंने बच्चे पाले कभी? इनको मालूम है बच्चों को संभालने के लिए आज क्या-क्या करना पड़ता है? जैसे ही मन ने ऐसे वार्तालाप करना शुरू की तो हमने अपने आपको क्या छूट दे दी? छोड़ दो उनको बनाने दो सतयुग, जब सतयुग बन जाएगा तो हम उसमें चले जाएंगे।

हमें अपनी क्वालिटी ऑफ लाइफ सुधारना होगी

महत्वपूर्ण यह है कि इस कलियुग को कैसे पार करना है? दिन प्रतिदिन हमारी क्वालिटी ऑफ लाइफ क्या होती जा रही है? बाहर साधनों के हिसाब से क्वालिटीज ऑफ लाइफ तो बहुत अच्छी होती जा रही है। लेकिन पर्सनल क्वालिटी ऑफ लाइफ बुरी और छोटी होती जा रही है। बुरी क्यों होती जा रही है? क्योंकि हम उसे होने देते हैं। सब लोग गुस्सा करते हैं तो गुस्सा तो करना पड़ता है। कलियुग के लोगों को नकल कर-कर के स्वतः हम लोग भी कलयुगी हो जाएंगे। कलियुग कैसे बनता है? कुछ लोग कलियुगी संस्कार क्रियेट करते हैं। बाकी सबलोग उनको नकल करते हैं।

एक से होती है कलियुग की शुरुआत

मान लिया आज तलाक आम बात हो गया है, लेकिन कभी न कभी किसी एक ने ही शुरुआत की होगी। सबने इक्कट्ठे तो नहीं शुरू किया होगा। किसी एक ने शुरू किया होगा। जिस समय पहले एक ने जब तलाक दिया होगा तो उस समय समाज ने क्या कहा होगा? ऐसा कैसे कर सकते हैं? और ये कितने साल पुरानी बात होगी? लगभग 50 साल। 50 साल पहले हमारी मान्यता क्या थी? शादी हो गई या अब वहीं रहना है? चाहे कैसी भी परिस्थितियां हों। ऐसा थोड़ी ही है कि उससे पहले चुनौतियां नहीं थीं। हर तरह के संस्कार थे लेकिन यहां दिमाग में मान्यता थी कि शादी हो गई अब यहां ही रहना है। माता-पिता बेटी को क्या कह के भेजते थे, अब वहीं रहना है। आज क्या बोलते हैं? मुश्किल आ रही है तो वापस आ जाओ। तंग कर रहे हैं तो वापस आ जाओ। तो ये मान्यता क्यों चेंज हुई? किसी एक ने किया, दो ने किया, पांच ने किया बाकी ने नकल किया और धीरे-धीरे समाज ने क्या कहा? ये तो आम बात है। जैसे ही समाज ने इस बात को मुहर लगा दी ये सब अब आम बात है फिर बहुतों ने किया। हमारे दादा-दादी की जो पीढ़ियां हैं उस समय बाहर भोजन नहीं करते थे। ऐसी कोई धारणा नहीं थी। कोई उस समय कहता बाहर खाना खाने जाना है तो अजीब लगता था। बाहर खाना खाने कौन जाता है? आज के बच्चे कहते हैं घर कौन खाना खाएगा? ये सारा खेल इस 50-100 सालों में बहुत कुछ हमने बदल दिया। एक ने किया, दो ने किया, पांच ने किया बाकी ने नकल किया। कलियुग इसी तरह नीचे गिरता गया।

समस्या- समाधान

रोज संकल्प करें- भगवान हर पल मेरे साथ है, साथी है

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

बहुतों ने बुरे कर्म कर लिए हैं। अपने इस जीवन में वह उनको याद आते रहते हैं वो, याद करने से दुःख मिलता है इसलिए पास्ट को पूरी तरह से समाप्त करना है। बाबा तो ये बोला करते थे पास्ट को ऐसे समझ लो जैसे पुराने जन्म की बात है। अभी तो ब्राह्मण जन्म हो गया। वो पुराना है जन्म का, जो कुछ किया है, किसी ने हमें तकलीफ दी या हमारे द्वारा कई गलतियां हो गई पूरा हुआ। अगर वो न होता तो हम यहां न आते। हम भगवान के पास ना आते अगर वो सब बातें न होता। बहुत सी आत्माओं को उनका दुःख भगवान के पास ले आया, कईयों की उनकी परेशानी यहां ले आई, बुरी घटनाएं यहां ले आयी हैं। सच्चा सुख ईश्वरीय मिलन में हैं। खुशी अंदर से पैदा होगी, दूसरों से नहीं मिलेगी।

अंदर से जो ख़ुश रहना सीख ले वो तो ख़ुशनसीब और जो सोचे दूसरे मुझे ख़ुश रखें, अच्छा बोलें, मेरी सेवा करें, मुझे मान दें, मेरी प्रशंसा करे तो वो व्यक्ति सदा ही दुःखी रहेगा। एक तो पास्ट को पूरी तरह से खत्म करना है। कइयों को होती है भविष्य की चिंता। कई तो सोच-सोचकर दुःखी हैं, है कुछ नहीं। सोच रहे हैं और दुःखी हो रहे हैं इसलिए भविष्य की सदा ही बहुत सुंदर संकल्प रखना। रोज सुबह उठते ही संकल्प करना मैं बहुत भाग्यवान हूं, बहुत सुखी हूं क्योंकि भगवान मेरे साथ है। इसलिए मेरे साथ सबकुछ बहुत अच्छा होगा। बाबा ने हम सभी को एक बहुत सुंदर स्वमान दिया हुआ है। मैं मास्टर क्रिऐटर हूं, मास्टर रचयिता। भविष्य को बनाने का अधिकार हमें हैं। भविष्य हमारे हाथ में है।

जैसे संकल्प करेंगे, वैसा हमारा भाग्य होगा

जैसे सुंदर संकल्प हम करेंगे वैसा ही हमारा भविष्य होगा। भविष्य की चिंता नहीं करो। बुरा भी अच्छे में बदल जाएगा। जब सारे संसार को भोजन नहीं मिलेगा बाबा अपने बच्चों को दाल-रोटी खिलाता रहेगा और क्या चाहिए। जब संसार को आग लगेगी बाबा के बच्चे सेफ रहेंगे, लेकिन उन्हीं को बाबा पर विश्वास होगा, जिन्होंने समर्पण भाव अपनाया है, जिन्होंने उसकी आज्ञा को पालन किया है। जिसने उसके प्यार को जीत लिया वो उनकी सुरक्षा बहुत करेगा, कष्ट नहीं होने देगा। तो मेरे साथ कुछ बहुत अच्छा होगा। मुझे किसी से कुछ नहीं चाहिए। अब वो सब नहीं होगा जो आज से 50 साल पहले होता था, बच्चे मां-बाप के आज्ञाकारी। अब तो छोटों को आपको सम्मान देना पड़ेगा तब वो आपकी बात सुनेंगे। अपनी कामनाओं को कम करना ही है।

हर आत्मा का अपना पार्ट हैः बाबा ने बहुत सुंदर ज्ञान दिया है हर आत्मा का अपना-अपना पार्ट है। पार्ट भी अपना, भाग्य भी अपना, बुद्धि भी अपनी,

> बच्चे तुम्हें ख़ुशी होनी चाहिए कि हम भगवान के सम्मुख बैठे हैं।

- राजयोगी बीके सूरज भाई,
माउंट आबू

संस्कार भी अपने। अपनों से ही आज कल सबको ज्यादा कष्ट हो रहा है। जहां भी कष्ट हो रहा हैं ख़ुशी जा रही है वो अधिकतर लोग अपने हैं। अपनों से कामनाएं भी बहुत होती हैं। अपनों पे अधिकार भी होता हैं, अपनों को कुछ कहा भी जाता है। बाबा ने कह दिया बच्चे तुम्हें बहुत ख़ुशी होनी चाहिए भगवान के सम्मुख बैठे हो, मैं तुम्हें स्वर्ग की राजाई देने आ गया हूं, भगवान तुम्हारे घर में मेहमान बनकर आ गया है। बहुत बड़ी ख़ुशी की बात है, मैं तुम्हारे लिए हथेली पर स्वर्ग ले कर आया हूं। ख़ुशी की बात है। ऐसी बातें हमें डायरी में नोट करनी हैं।

अच्छी बातों को लिख कर जेब में रखें

20-25 बातें ख़ुशी की, 20-25 बातें ईश्वरीय नशे की होनी ही चाहिए। इसे पढ़ते रहेंगे बातें हल्की होती रहेंगी। हमेशा लिख कर रख लो भगवान हमारे साथ है, पढ़ लिया करो रोज। साथ होने के दो मतलब होते हैं। पहला स्थूल रूप से साथ रहते हो दूसरा है आपका किसी बड़े आदमी से कनेक्शन हो आपके शहर में, यह आपका कोई रिलेटिव बड़ा आदमी हो आपको नशा रहता है न फलाना आदमी मेरे साथ है।

इधर, भगवान हमारे साथ हैं तो डरने की क्या बात है। एकांत में हमारा चिंतन बहुत अच्छा चलेगा। लिखा करेंगे सभी अच्छी-अच्छी बातें। पुरुषार्थ के लिए कुछ बातें-भगवान मुझे साथ दे रहा है, कौन मुझे साथ दे रहा है ये नशा चढ़ता रहे? स्वयं भगवान मुझे साथ दे रहा है। अपने चारों ओर रोज सवेरे और शाम शक्तियों का घेरा बनाना है। क्योंकि जीवन में सारा महत्व है हमारे विचारों का। हमारे विचार जितने महान और श्रेष्ठ होंगे हमारा जीवन भी उतना ही महान और दिव्य होगा।

RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2024-26, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 July. 2025
» प्रकाशक व मुद्रकः करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित » संपादकः बीके कोमल » संयुक्त संपादकः बीके पुष्पेन्द्र